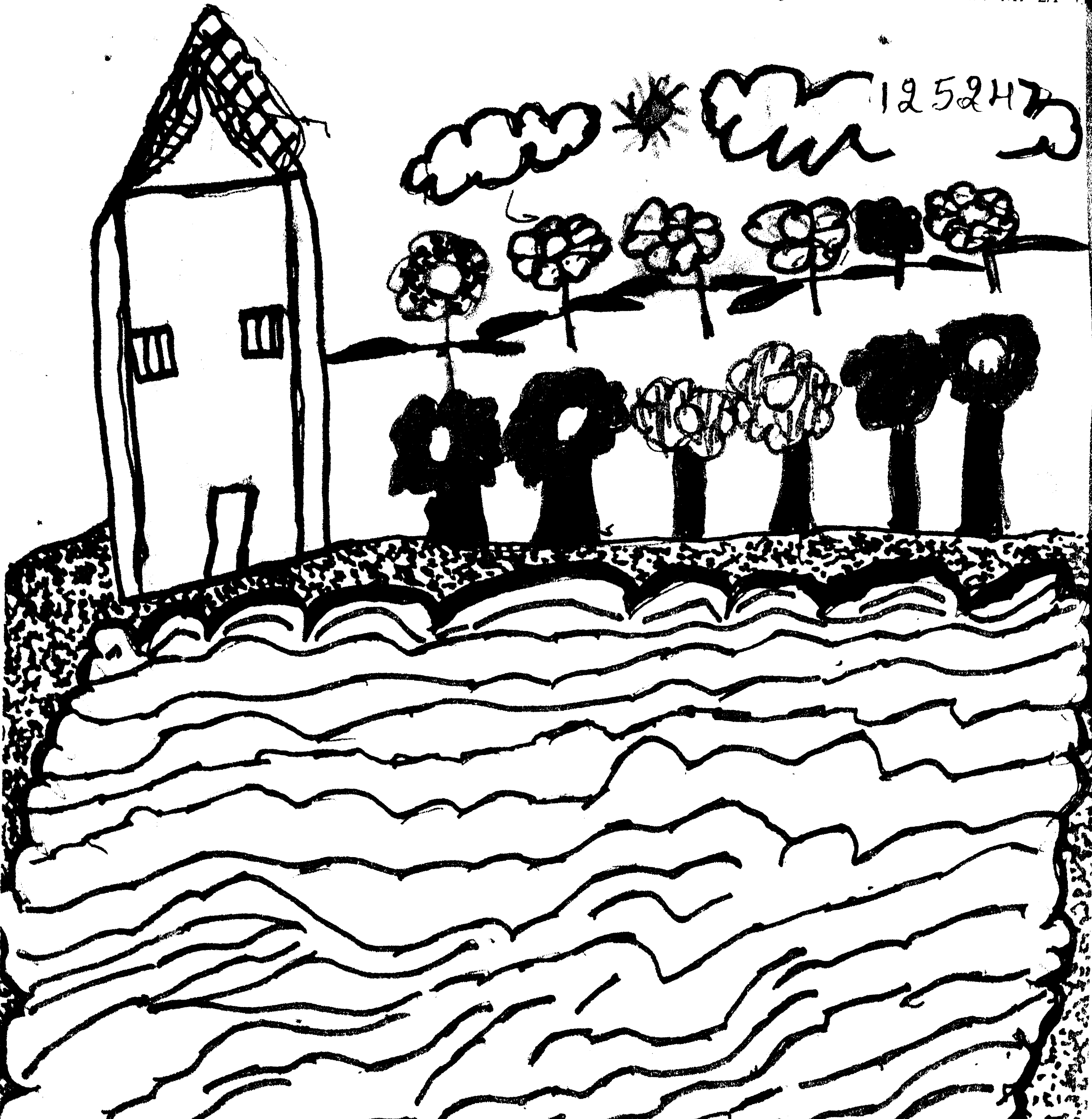
चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-4



श्रेया श्रीवास्तव, चार वर्ष, तेंदूखेड़ा, दमोह, म. प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना

# चकमक

अप्रैल, 1999

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 7.00





● श्रद्धा ताम्रकार, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

● सुखविन्द स्वाति, पाँचवीं, देहरादून, उ. प्र.



# चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-14 अंक-9 अप्रैल 1999



विनोद रायना

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

टुलटुल विस्वास

**कला सज्जा**

जया विवेक

**विज्ञान परामर्श**

सुशील जोशी

कमल सिंह, मनोज निगम,
अशोक रोकड़े



**चकमक का चंदा**

एक प्रति : सात रुपए

छमाही : 40.00 रुपए

वार्षिक : 75.00 रुपए

दो साल : 140.00 रुपए

तीन साल : 200.00 रुपए

आजीवन : 750.00 रुपए
साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की सदस्यता मुफ्त।

आजीवन : 1000.00 रुपए.
साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक–एक प्रति पर 50 प्रतिशत की छूट।

**सभी में डाक खर्च हमारा**

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

**कवर का कागज : यूनीसेफ के सौजन्य से**

**पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता**

**कलव्य**
**1/25**
**अरेरा कॉलोनी,**
**भोपाल - 462 016**
**(म.प्र.)**
**: 563380**




● प्रभात कटारे, आठवीं, कुरवाई, विदिशा, म. प्र.

## *163 वें अंक में . . .*



आवरण : लाल सिर वाली बया जो बेलों और दूसरे पौधों की डंगालों के सिरों को आपस में बुनकर अपना घोंसला बनाती है। नर बाहर से घोंसले को बुनता है और मादा अन्दर से उसे आकार देती है। फोटो दि पिक्टोरियल एन्सायक्लोपीडिया ऑफ बर्ड्स ऑफ दि वर्ल्ड से साभार।



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

# इस बार की बात . . .

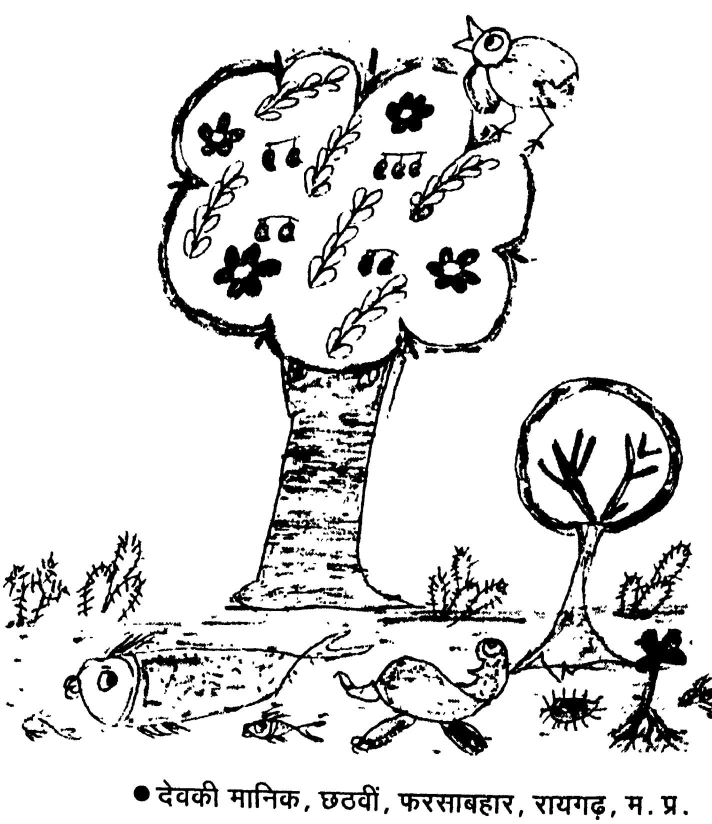
गर्मी आई
छुट्टी लाई
पक्षी चहके
फूल महके

जब तक यह अंक तुम्हारे पास पहुँचेगा, किसी की परीक्षाएँ ख़त्म हो चुकी होंगी, किसी की ख़त्म होने को होंगी। और साथ ही शुरू होगी अगली कक्षा की पढ़ाई। नई किताबें, नए अभ्यास, नए विषय। चकमक के लिए भी कुछ नया करोगे?

तुम्हारी कविताएँ, कहानियाँ और चित्र कुछ नयापन लिए हम तक पहुँचेंगे, हमें उम्मीद है। तुम्हारे लिए हम इस बार चकमक में एक चित्र छाप रहे हैं, पेज नम्बर 17 पर। इसे देखकर तुम्हारी कल्पना की उड़ान कितनी ऊँची जाती है, हम देखना चाहते हैं। इसे देखकर कविता, कहानी या चित्र भी तुम बनाकर हमें भेज सकते हो।

एक और ज़रूरी बात तुम्हारी रचनाओं के साथ तुम्हारा नाम तो होना ही चाहिए, साथ ही पूरा पता लिखना भी मत भूलना। पते में गाँव या मोहल्ले का नाम, पोस्ट ऑफिस का नाम, ज़िले का नाम, पिनकोड और राज्य का नाम भी लिखना।

तो बस, अपनी नई-नई पढ़ाई में से थोड़ा-सा वक्त निकालकर चकमक के लिए भी कुछ नया-नया लिख डालो।



● देवकी मानिक, छठवीं, फरसाबहार, रायगढ़, म. प्र.

## चकमक में से चुनी हुई सामग्री से तैयार पुस्तकें

## बच्चों की लिखी कहानी-कविताएँ और बच्चों के लिए लिखी गई रचनाओं के संकलन

1. **लोमड़ी और ज़मीन :** चकमक में प्रकाशित बच्चों की लिखी कहानियों का संग्रह, मूल्य : 12 रुपए।
2. **आज़ादी की नुक्ती :** चकमक में प्रकाशित बच्चों की लिखी कहानियों का संग्रह, मूल्य : 12 रुपए।
3. **प्यारा लड्डू :** चकमक में प्रकाशित बच्चों की लिखी कविताओं का संग्रह, मूल्य : 10 रुपए।
4. **हमको फिर छुट्टी :** चकमक में प्रकाशित बच्चों की लिखी कविताओं का संग्रह, मूल्य : 10 रुपए।
5. **कहानी संग्रह :** प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) समूह द्वारा संकलित कथाएँ, मूल्य : 10 रुपए।
6. **कविता संग्रह :** प्राशिका समूह द्वारा संकलित कविताएँ, मूल्य : 10 रुपए।
7. **नजानू के रंग :** चकमक में प्रकाशित नाटकों का संग्रह, मूल्य : 12 रुपए।
8. **हड्डी :** चकमक में प्रकाशित नाटकों का संग्रह, मूल्य : 12 रुपए।
9. **बाँकी-बाँकी धूप :** चकमक में प्रकाशित बड़ों द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई कविताएँ, मूल्य : 16 रुपए।
10. **रूसी-पूरी और चूहे को मिली पेंसिल :** सुन्दर चित्रों और छोटी कहानी वाली रूसी चित्रकथाएँ। प्रत्येक का मूल्य 5.00 रुपए।
11. **फर फर उड़ी पतंग :** बड़ों द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई कविताएँ, मूल्य : 2 रुपए।



यहाँ से काटें

## चकमक
### सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर
माह .................. से
चकमक भेजना शुरू करें–
नाम
मोहल्ला
डाकघर
ज़िला
पिन
सदस्यता शुल्क रु. .........
..........................
माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

| | |
|---|---|
| छह माह : | 40.00 रुपए |
| एक साल : | 75.00 रुपए |
| दो साल : | 140.00 रुपए |
| तीन साल : | 200.00 रुपए |
| आजीवन : | 750.00 रुपए * |
| आजीवन : | 1000.00 रुपए ° |

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार
° इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

**एकलव्य,**
**ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,**
**भोपाल 462 016 (म. प्र.)**

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

## खेल-खिलौने बनाने और अन्य गतिविधियों की पुस्तकें

**1.खेल-खेल में :** सस्ती और सुलभ चीज़ों से विज्ञान के रोचक खिलौने बनाने की जानकारी, मूल्य : 10 रुपए।

**2. कबाड़ से जुगाड़ :** बेकार सामान से विज्ञान के प्रयोग करने और समझने की पुस्तक, मूल्य : 15 रुपए।

**3. खिलौनों का बस्ता :** कुछ नए प्रयोगों और मॉडलों की किताब, मूल्य : 15 रुपए।

**4. माचिस की तीलियों के रोचक खेल :** खेल पहेलियों की पुस्तिका, मूल्य : 3 रुपए।

**5. वर्ग पहेली :** चकमक में प्रकाशित वर्ग पहेलियों का संकलन, मूल्य : 6 रुपए।

**7. खेल खिलौने :** चकमक में प्रकाशित कुछ खेलों का संग्रह, मूल्य : 15 रुपए।

**8. एक आधार अनेक आकार :** ओरीगेमी पर हिन्दी में एक किताब, मूल्य : 20 रुपए।

यहाँ से काटें

## चकमक का उपहार

**अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।**

**नाम** ............................

............................

**मोहल्ला** ............................

**डाकघर** ............................

**ज़िला** ............................

**पिन** ☐☐☐☐☐☐

............................

............................

## लघु पुस्तिकाएँ

**1. विज्ञान क्या है :** विज्ञान की प्रक्रिया को कहानी के माध्यम से समझाती एक पुस्तिका, मूल्य : 3 रुपए।

**2. इतिहास क्या है :** इतिहास लिखे जाने के स्रोतों की पड़ताल करती एक पुस्तिका, मूल्य : 3 रुपए।

**3. फर फर उड़ी पतंग :** बड़ों द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई कविताएँ, मूल्य : 2 रुपए।

**4. तीन दोस्त :** छोटे बच्चों के लिए चित्रात्मक कहानी की किताब, मूल्य : 1 रुपए।

**5. दो तोते** और **हलीम चला चाँद पर,** छोटे बच्चों के लिए चित्रकथाएँ, मूल्य : 50 पैसे प्रत्येक।

## चार्ट और पोस्टर

**1. भारत जोड़ो :** नक्शा पहेली, मूल्य : 3 रुपए।

**2. शरीर के आंतरिक अंग :** शरीर के आंतरिक अंगों की जानकारी देते चार्ट, मूल्य : 3 रुपए।

**3. अपनी हड्डियाँ पहचानो :** शरीर की हड्डियों के बारे में जानकारी देता चार्ट, मूल्य : 1 रुपए।

**4. घुमक्कड़ :** विभिन्न जीवों और पेड़–पौधों के जीवन चक्र का घुमक्कड़ बनाने वाले चार्ट, प्रत्येक का मूल्य : 1 रुपए।

**5. कविता पोस्टर :** बच्चों के लिए कविताओं के पोस्टर, मूल्य : 4 रुपए और 3 रुपए।

*ये प्रकाशन डाक से भी मँगवाए सकते हैं। राशि अग्रिम भेजें, साथ में डाक खर्च के लिए मूल्य की 10 प्रतिशत राशि (रजिस्टर्ड डाक के लिए 12 रुपए और अतिरिक्त) जोड़कर मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट* ***एकलव्य*** *के नाम पर बनवाकर भेजें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :*

**एकलव्य**

ई-1/25, अरेरा कॉलोनी

भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोन : 563380

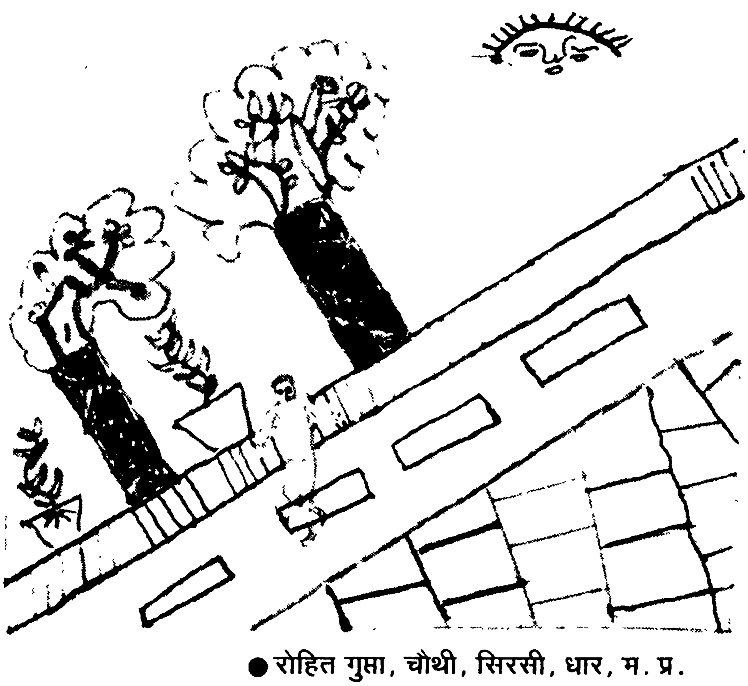




## सूरज के तेवर

तेज धूप चमकती सिर पर
सूरज ने दिखलाए तेवर
गर्म हवाएँ बहती दिन भर
वक्त बिताना होता दूभर
बहता खूब पसीना
मुश्किल होता जीना
प्यास बुझाते शीतल जल
भाते मीठे-मीठे फल
लस्सी, शर्बत, आइसक्रीम
काम न चलते इसके बिन
दिनभर कैद घरों में रहते
पंखे और कूलर चलते
शाम को जब सूरज छुप जाता
तब हम टहलने निकलते

● सुरेन्द्र कुमार सेठिया, सातवीं,
अलनार, बस्तर, म. प्र.



● रोहित गुप्ता, चौथी, सिरसी, धार, म. प्र.

## गर्मी आई

गर्मी आई गर्मी आई
ठंडे ठंडे शरबत लाई
स्कूल बस्ता सब छोड़ा हमने
खुशियों की बहार आई
खाने को मिलते तरबूज
आम लीची और खरबूज
सब मिलकर खेलें खूब
चढ़ गया क्रिकेट का भूत

● अर्पित जैन, दस वर्ष, कानपुर, उ. प्र.

# आओ खेलें खेल - गाएँ गीत



तुम लोग कई तरह के खेल खेलते हो। अलग-अलग जगहों पर विभिन्न तरह के खेल प्रचलित होते हैं। जब हम छोटे थे उस समय के खेल और जो खेल तुम लोग आजकल खेलते हो उनमें बहुत अन्तर आया है।

कब कौन-सा खेल खेला जाए यह तुम कैसे चुनते हो? हम तो अक्सर खेल का चुनाव करते समय सबसे पहले यह देखते थे कि आज दोस्त कितने इक्ट्ठे हुए हैं। अगर हम दो सहेलियाँ हैं तो कोई ऐसा खेल खेलते जिसे दो लोग खेल सकते हैं। ज़्यादा लोग हों, तो कोई और खेल।

कई खेल थे छिया-छाई, छुपन-छुपाई, नदी-पहाड़ आदि। कई सारे खेलों में खेलते हुए कुछ न कुछ गाना भी गाते जाते हैं। तुम भी इस तरह के कई खेल खेलते होगे। हम इस बार एक खेल और उसके साथ में गाया जाने वाला गीत यहाँ दे रहे हैं।

तुम्हें इस तरह के कुछ और खेल और उनके साथ गाए जाने वाले गीत पता हों तो हमें लिखना। जो खेल यहाँ दिया जा रहा है वो भी अगर किसी और तरह से तुम खेलते हो या इसके गीत को तुम किसी और तरीके से गाते हो तो वो भी लिखना। हम कोशिश करेंगे कि जितने खेल और उनके गीत हमें मिलेंगे, उन्हें चकमक के सभी पाठकों तक पहुँचा सकें।

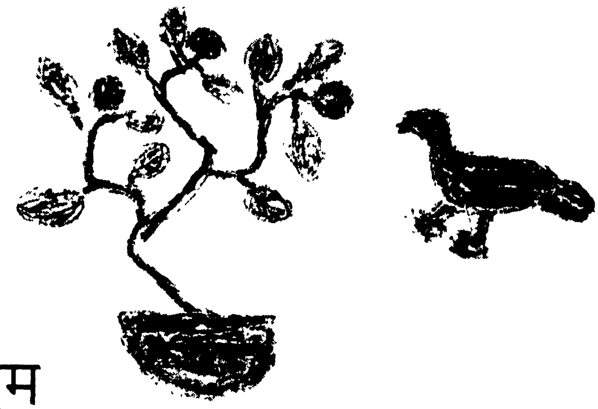
इस खेल में दो बच्चे अपनी-अपनी जगह पर गोल-गोल घूमकर पहले अपने हाथों से ताली बजाते हैं। फिर एक दूसरे के हाथ से ताली बजाते हैं। गाना गाते जाते हैं और घूमना चलता रहता है।

इसी एक खेल के लिए अलग-अलग कई गीत गाए जाते हैं। हम यहाँ दो गीत दे रहे हैं। एक गीत है -



आँच आँच
पूरे पाँच
लाओ लाठी
मारो साँप
इतर की शीशी
चकनाचूर
राजा की बेटी
कमल का फूल

और, दूसरा गीत कुछ ऐसा है –



प्रभावती, चौथी, बेहरापुरा, बैतूल, म.प्र.

## झूम भाई झूम

झूम भाई झूम
पापड़े की झूम
संतरे के झाड़ पे
चादर बिछाएँगे
चादर का कोना फटा
दर्जी बुलाएँगे
दर्जी की सुई टूटी
घोड़ा बुलाएँगे
घोड़े की टाँग टूटी
हल्दी लगाएँगे
हल्दी से अच्छा हुआ
खुशियाँ मनाएँगे





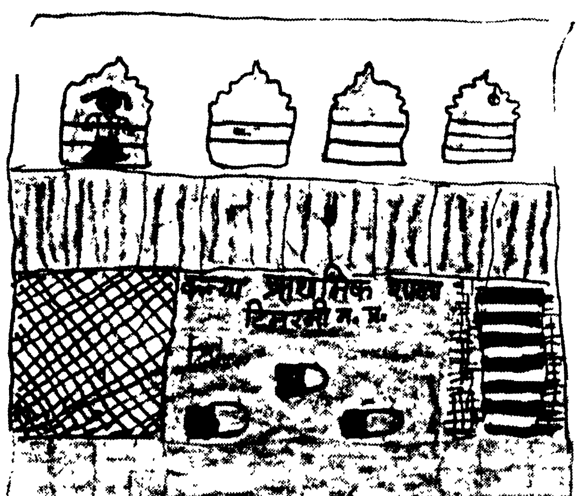
विप्लव, चौथी, पलिया पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.




## मुझे टाँके लगे

**एक** बार की बात है। मैं अपने स्कूल के मैदान में अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। अचानक मैं गिर पड़ा। मैंने सोचा कि चोट नहीं लगी है। मगर चोट तो बहुत बुरी लगी थी। ठण्डी के दिन थे। इसलिए मैं लाल रंग का स्वेटर पहना हुआ था। इसलिए खून दिखाई नहीं दिया। जब स्वेटर उतारा तो पता चला कि कुहनी फट गई है। तो मैडम ने जल्दी से पट्टी बाँध दी। जब स्कूल से घर गया तो डॉक्टर के पास टाँके लगवाने ले गए। पहले बहुत रोया फिर मैं मान गया। टाँके लगवाने में ज्यादा दर्द नहीं हुआ। फिर जब टाँके लगवाकर घर आया तो बैठकर किताब पढ़ने लगा। फिर कुछ दिनों बाद टाँके खोल दिए।

● उत्सव पटेल, पहली, भोपाल, म. प्र.



होशंगाबाद, म. प्र.

## मेरी शाला

मेरी शाला बहुत अच्छी
शाला में सब जाते बच्चा बच्ची
गुरूजी गीत कहानी सुनाते
चुटकुला सुनाकर हमको हँसाते
कभी बन्दर मेंढक हाथी बनाते
कविता पढ़ाते अच्छी अच्छी
शाला में जाते हम बच्चा बच्ची

● संजीव कुमार, चौथी, चोपना, छिंदवाड़ा, म. प्र.

## सपने में हुआ तमाशा

मैंने सपने में देखा था
एक मोटा बन्दर बैठा था
उस पर एक चूहा बैठा था
चूहे पर चींटा बैठा था
तभी सपने में हुआ तमाशा
चींटे ने चूहे को काटा
चूहे ने बन्दर को काटा
बन्दर दुम दबाकर भागा।
सारे जानवर हँसकर बोले
लो सपने में हुआ तमाशा।

● मृणालिनी चन्द्रा, छठवीं, गाजीपुर, उ. प्र.



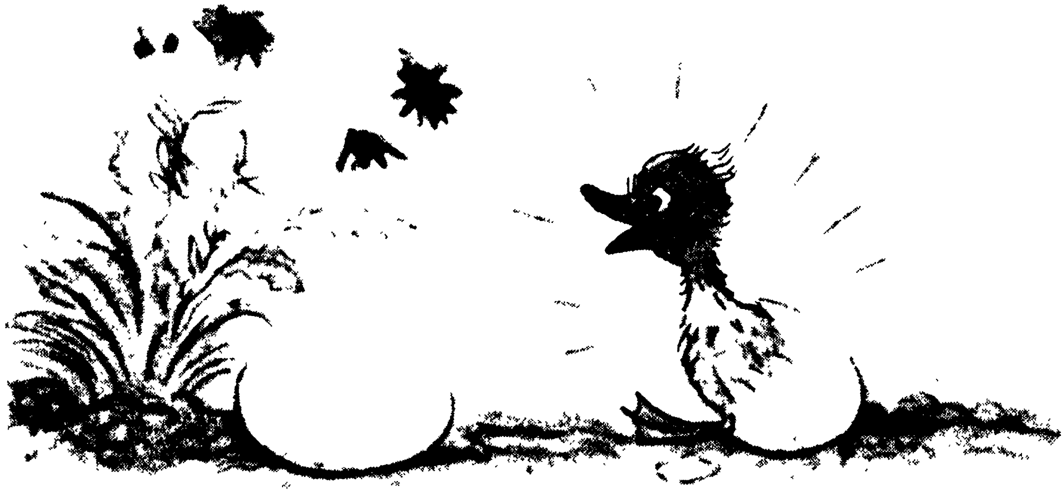
● विनोद कुमार, सातवीं, बिजुर, धार, म. प्र.



# मैं भी . . .

चित्र एवं कहानी - वी. सुतेयेव





एक अंडे में से बत्तख का बच्चा निकला।
''लो मैं अंडे में से निकल आया।'' बत्तख का बच्चा बोला।



एक और अंडे में से मुर्गी का चूज़ा निकला।
''मैं भी आ गया।'' चूज़ा बोला।



''मैं घूमने जा रहा हूँ।'' बत्तख का बच्चा बोला।
''मैं भी चलूँगा।'' चूज़ा बोला।



''मैं गड्ढा खोद रहा हूँ।'' बत्तख का बच्चा बोला।
''मैं भी खोदूँगा।'' चूज़ा बोला।



''मुझे एक केंचुआ मिला।'' बत्तख का बच्चा बोला।
''मुझे भी।'' चूज़ा बोला।



''मैंने एक तितली पकड़ी।'' बत्तख का बच्चा बोला।
''मैंने भी तितली पकड़ी।'' बोला चूज़ा।



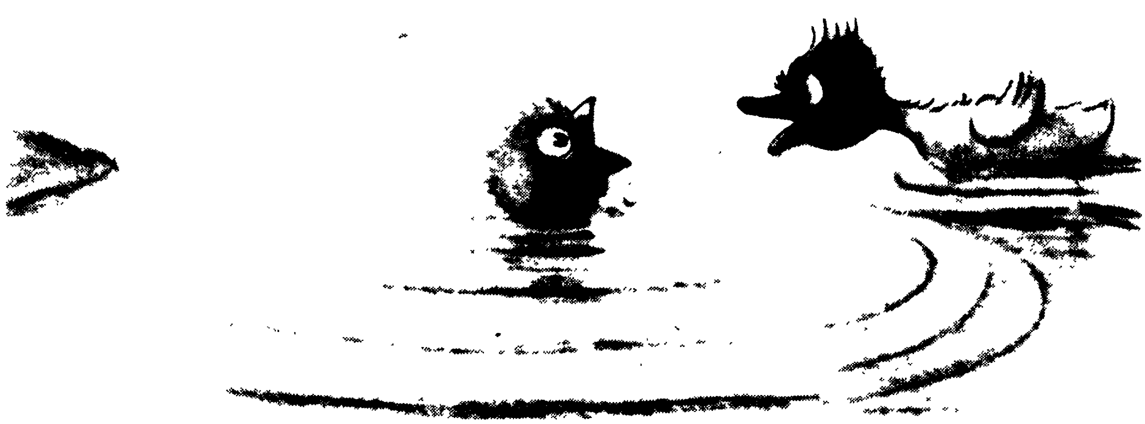
''मैं तैरना चाहता हूँ।'' बत्तख का बच्चा बोला।
''मैं भी।'' बोला चूज़ा।



''देखो मैं तैर रहा हूँ।'' बत्तख का बच्चा बोला।



''मैं भी तैरूँगा।'' बोला चूज़ा।



''बचाओ . . .।'' चूज़ा चिल्लाया।



बत्तख के बच्चे ने चूज़े को पानी से बाहर निकाला।



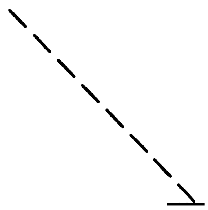
'मैं वापस पानी में जा रहा हूँ।'' बत्तख का बच्चा बोला।

''अब मैं नहीं जाऊँगा।'' चूज़ा बोला ।

(स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स से साभार)

# खेल कागज़ का

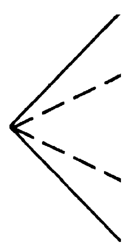
## पेंसिल बनाओ



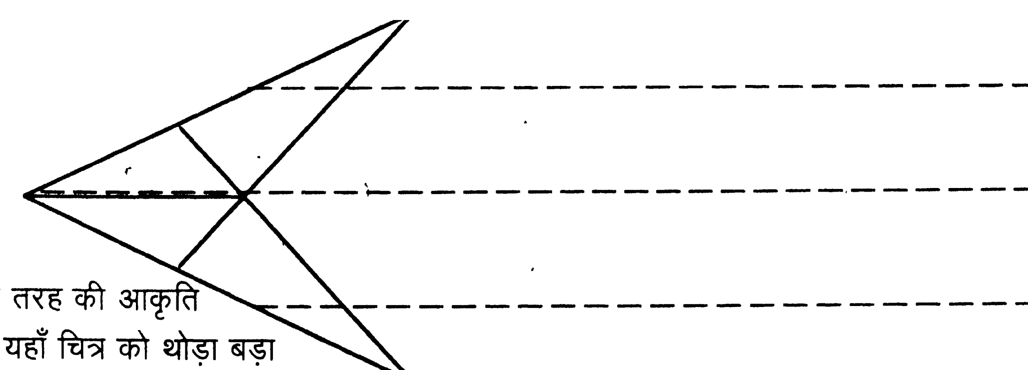
1. काग़ज़ की एक आयताकार पट्टी ले लो। इस पट्टी के एक सिरे पर मोड़ बनाना हैं। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। फिर इस पटटी को पलट लो।

2. इस तरह की आकृति बनेगी। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बना लो।



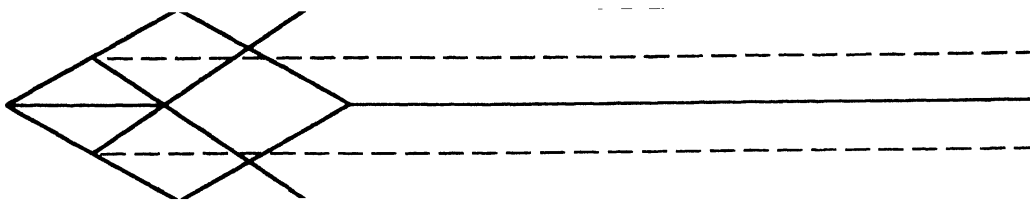


3. इस तरह। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ।

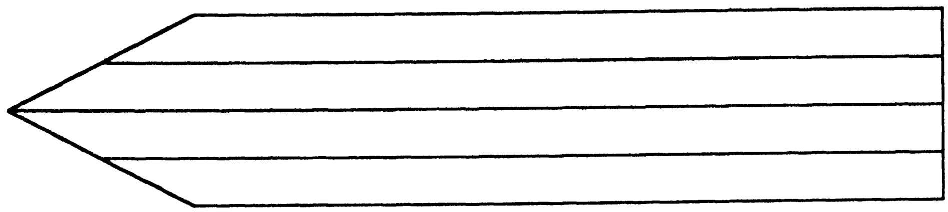


3. इस तरह की आकृति बनेगी। यहाँ चित्र को थोड़ा बड़ा करके दिखाया गया है।

अब चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। बीच वाली रेखा पर बना मोड़ खोल लो



5. अब इस चित्र में दिखाई दे रही दोनों टूटी रेखाओं पर से भी मोड़ बना लो।



6. बस तैयार हो गई पेंसिल। भई, यह पेंसिल तुम्हारी दूसरी पेंसिल की तरह चलेगी तो नहीं, पर अपने दोस्तों को बधाई या परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएँ देने के लिए इस पेंसिल का इस्तेमाल कर सकते हो। इसके अन्दर तुम अपने दोस्तों के लिए संदेश भी लिख सकते हो।

## कविता / कहानी लिखो

सबसे पहली बात तो यह कि यह चित्र तुम्हें कैसा लगा। तुम इसे देख कर कोई कविता या कहानी लिखकर हमें भेजो। चुनी हुई कविताएँ और कहानियाँ चकमक में प्रकाशित की जाएँगी। और उपहार में मिलेगी छह माह तक चकमक। तो बस काग़ज़ पेन उठाओ, सोचो और शुरू करो ।



दीपसिंग,पाँचवीं

मेरा पन्ना

# चाँद फँसा मुसीबत में

**यह** बहुत पुरानी बात है। यानि तब की जब आकाश में सूर्य और चाँद नाम के केवल दो ही पिण्ड थे। सूर्य तो समुद्र में से निकलता था और समुद्र में ही डूबता था। मगर चाँद का घर पृथ्वी पर एक गुफा में था। जहाँ पर सभी की नज़रों से छिपकर मज़े में रहता था। दिन के समय आकाश पर सूर्य का अधिकार होता था और रात में चाँद का।

चाँद के ढेर सारे बच्चे थे। जिन्हें हम तारे कहकर बुलाते हैं। बच्चे (तारे) बड़े-ही शैतान थे। वे थे तो तारे, मगर कोई उन्हें तारा कहकर बुलाए यह उन्हें नापसन्द था। उनमें से हरेक का अपना नाम था। जैसे कि ध्रुव जो अकेला ही रहता था। और सात बच्चे जो हमेशा साथ रहते थे इसलिए उनका नाम था सप्तर्षि। एक था लुब्धक जो सबसे अधिक नटखट था। आदि।

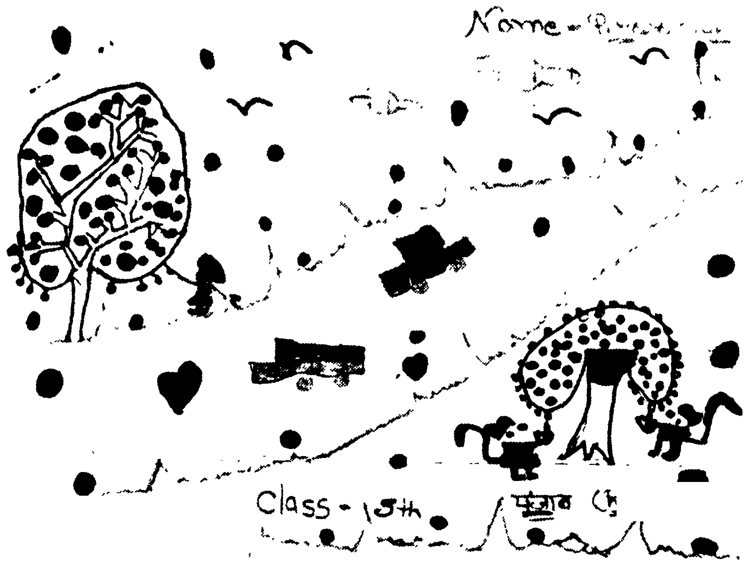
एक दिन की बात है कि सूर्य समुद्र में डूब चुका था। और चाँद आकाश में जाने के लिए सज-सँवर रहा था। तो तारे ज़िद कर बैठे कि वे हमेशा घर पर बैठे रहते हैं और आप मज़े से सारी रात घूम-फिरकर घर लौट आते हैं। आज तो हम भी चलेंगे आकाश की सैर को। मगर चाँद ने बच्चों (तारों) की बात पर ध्यान न देकर उन्हें डाँट दिया। और स्वयं किरणों की सीढ़ी लगाकर आकाश में चढ़ चमकने लगा। उस दिन चाँद पूरे गोल आकार में था। तभी क्या हुआ, जो किरणों की सीढ़ी लगाकर वह ऊपर (आकाश) चढ़ा था वह तारों ने नीचे खींच ली। पिछले कई सालों से ऐसा एक बार भी नहीं हुआ था। अब तो चाँद की सिट्टी-पिट्टी गुम। वह सुबह होने पर नीचे कैसे उतरेगा? सूर्य सुबह आएगा। चूँकि आकाश पर सुबह से रात तक सूर्य



● महेन्द्र सिंह पाटीदार, चौथी, भाड़खा, बाड़मेर, राजस्थान



मेरा पन्ना




● प्रीति शर्मा, पाँचवीं, लुधियाना, पंजाब

का अधिकार रहता है इसलिए वह मुझे देखकर गुस्सा होगा, तब तो बहुत बुरा होगा। चाँद घबराकर बोला, ''बच्चो, किरणों की सीढ़ी वहीं लगा दो वर्ना मैं घर पर आकर तुम्हारी मरम्मत करूँगा।''

तब तारे बोले, ''जब आप नीचे आ ही नहीं सकते तो पिटाई क्या करोगे। हम तो सीढ़ी तब लगाएँगे जब आप हमें आकाश में आने दोगे।''

चाँद बोला, ''ठीक है, तुम ऊपर आ सकते हो मगर सूर्य के आने से पहले सभी को नीचे जाना पड़ेगा।''

तारे बोले, ''यदि हम नीचे उतरे तो आप हमें गुफा में बन्द कर दोगे और फिर हम कभी आकाश की सैर नहीं कर सकेंगे।''

अब तो चाँद बड़ा ही घबरा गया। और घबराकर पीला हो गया। और मारे घबराहट के उसका आकार भी घट गया।

तब चाँद बोला, ''यदि सुबह सूर्य देखेगा कि मैं आकाश में हूँ और तारे भी साथ में हैं तो वह गुस्सा होगा। और हमें फेंक बाहर करेगा। वह मुझे तथा तुम्हें समुद्र में डुबो सकता है।''

मगर तारों ने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं। वे बोले, ''हमें मालूम है कि आपके पास अदृश्य होने की शक्ति है सो दिन के समय आप इस शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं।''

अब तो चाँद अपने बच्चों से हार मान गया। तब उसने उन्हें आकाश में आने की इजाज़त दे दी। तब सारे तारे किरणों की सीढ़ी लगाकर हल्ला करते हुए आकाश में चढ़ गए और चाँद से थोड़ा-थोड़ा प्रकाश लेकर चमकने लगे। किन्तु कुछ तारों ने ही चाँद से प्रकाश लिया बाकी के पास अपनी रोशनी थी।

तभी से चाँद और तारे आकाश में हैं। वे दिन में अदृश्य हो जाते हैं और रात को चमकते हैं। तारों ने ही दूसरे ग्रहों तथा पिंडों को जो उनके मित्र थे, आकाश में रहने के लिए बुला लिया। वे भी दिन में गायब हो जाते थे।

● पारुल बत्रा, आठवीं, टीकमगढ़, म. प्र.



*विशेष*

# अनोखे घरोंदों के बाशिंदे

मधुसूदन भार्गव

दूसरे जीव-जन्तुओं की तरह ही दाने और पानी के बाद पक्षियों के इको-तंत्र या रहन-सहन का मुख्य अंग होता है उनका घर या आवास। पक्षियों के रहने की जगह को आमतौर पर घरोंदा या घोंसला कहते हैं। किसी जगह पर घोंसला बनाने से पहले पक्षी वहाँ की भौगोलिक बनावट, नमी, गर्मी, दाना-पानी मिलने की सुविधा या सम्भावना, शिकारी जानवरों से बचाव .... ऐसी सब बातों का ख़्याल करते हैं।

अलग-अलग जाति के परिन्दों की घरोंदा बनाने की अपनी अलग शैली होती है। इन घरोंदों में एक तरफ इनका हवा-पानी, सर्दी-जुकाम-गर्मी, आँधी-तूफान आदि से बचाव होता है। दूसरी ओर ये दूसरे पक्षियों व जानवरों से सुरक्षा, आराम करने या सुस्ताने की जगह, रैन-बसेरा, जच्चगी आदि की जगह का काम भी देते हैं। चलो इस बार कुछ पक्षियों के घरोंदों को ध्यान से देखते हैं।

**सारस** - तुमने देखा है सारस? यह लगभग इन्सान के कद का, लाल-गुलाबी रंग के सिर व टाँगें और स्लेटी रंग के शरीर वाला पक्षी है। इसकी लम्बी - पतली टाँगे भी लाल या गुलाबी रंग की होती हैं। नर और मादा एक जैसे नज़र आते हैं, और ये आम तौर पर जोड़े में ही खेतों के आसपास या दलदली इलाके में दिखते हैं। इन्हें भारत में सारस, सफ़ेद सारस, करच, कुटुंग आदि नामों से जाना जाता है।

सारस का प्रजनन काल जुलाई से दिसम्बर के बीच होता है। इस समय सारस के जोड़े पानी से घिरा कोई टीला या पानी भरे धान के खेतों के बीच कोई जगह चुनते हैं। यह जगह घोंसले के लिए सही होती है, क्योंकि अण्डों को आसानी से सुरक्षा मिल जाती हैं। घोंसला घास-फूस-सरकण्डों आदि के एक बड़े ढेर से बना होता है।

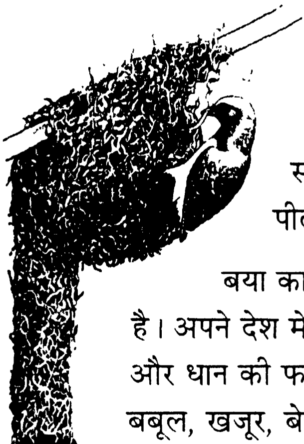
सारस के अण्डे हल्के हरे या गुलाबी-सफेद रंग के, कभी-कभी बैंगनी या भूरे चित्तेदार होते हैं। अण्डों को सेने और कुत्ते या मवेशी आदि जानवरों से बचाने का काम नर और मादा सारस बराबरी से करते हैं।





**दर्जी चिड़िया** - यह एक छोटी सी फुर्तीली चिड़िया है। इसकी पीठ का रंग हरापन लिए होता है। सिर भूरा और पेट स.फेद होता है। नर और मादा दोनों एक ही रंग-रूप व आकार के होते हैं। दर्जी चिड़िया अकेले या जोड़ों में झाड़ियों में दिखाई देती है। यह जंगलों के साथ-साथ ही घनी आबादी वाले शहरों में भी रह लेती है।

दर्जी चिड़िया अपनी घोंसला बनाने की कला के कारण ही इस नाम से पुकारी जाती है। वैसे कहीं-कहीं इसकी फुदकते रहने की आदत के कारण इसे फुटकी भी कहते हैं। इनका प्रजनन काल अप्रैल से सितम्बर तक होता है। यह अपनी पैनी चोंच से दो या दो से ज़्यादा नरम पत्तों को आपस में किनारियों से सीकर कटोरानुमा आकार दे देती है। फिर इसमें कपास, पंख, नर्म घास या दूसरे किस्म के रेशे भरकर इसे आरामदायक बनाया जाता है। यह घरोंदा पेड़ों पर मध्यम ऊँचाई पर बना होता है। बाहर से पत्तों से बना होने से पेड़ पर यह आसानी से दिखाई नहीं देता। इस तरह यह काफी सुरक्षित रहता है।



**बया** - *'अचरज बंगला एक बनाया, ऊपर नींव तले पर छाया'*। यह पंक्ति बया की घोंसला बनाने की कारीगरी देखकर मशहूर शायर अमीर खुसरो ने कही थी। बया को तो तुम पहचानते ही होगे। मादा बया (और प्रजनन काल के अलावा बाकी समय नर बया भी) काफी-कुछ मादा गौरैया जैसी दिखती है। गाढ़े चित्तेदार, धुँधले पीले रंग की पीठ और पेट की तरफ मटमैला सफेद रंग।

बया का प्रजनन काल मई से सितम्बर तक होता है। अपने देश में यह समय दक्षिण पश्चिम मानसून का और धान की फसल का भी है। बया अपना घोंसला बबूल, खजूर, बेर, खेजड़ी या खेतों के किनारे लगे ऐसे ही कंटीले पेड़ों की डंगालों में बनाते हैं।



घरोंदा बनाने के लिए नर बया घास, सरपद, धान या बाँस के पत्तों के किनारे से निकाले लम्बे रेशों से जुलाहे की तरह ताना-बाना बुनती है। पानी के ऊपर लटके होने से इनमें कीचड़ के छोटे-छोटे थक्के भी चिपक जाते हैं। बया के घोंसले में घुसने का रास्ता नीचे की ओर बनी पतली लम्बी नली में से होता है। ऊपर जाकर कटोरे वाला हिस्सा कई बार दो भागों में बँटा रहता है। ताकि एक तरफ से अगर कोई दुश्मन अन्दर घुसे तो दूसरी तरफ से बया बाहर भाग सके। इन घोंसलों की जटिलता के कारण ही कई बार बया दुश्मनों से बच पाती है और अपने अण्डों को भी बचा पाती है।



बया के घोंसले की एक और ख़ास बात है। तुमने शायद देखा हो कि कई पेड़ों पर बया के पूरे-पूरे घोंसलों के साथ ही कई सारे अधबने घोंसले भी लटकते रहते हैं। कभी सोचा है क्यों? होता यूँ है कि नर बया घोंसला बनाना शुरू करते हैं, जब वे कटोरी वाले हिस्से तक पहुँच जाते हैं तो मादाओं का इंतज़ार करते हैं। ऐसे समय में कई सारी मादा बयाएँ आती हैं और नरों द्वारा बनाए आधे घोंसलों की छानबीन कर उन्हें अपने लिए चुन लेती हैं। घोंसले के साथ ही उसे बनाने वाले नर बया का भी वह चुनाव कर लेती हैं। ऐसे में अगर किसी घोंसले को किसी भी मादा बया ने पसन्द न किया हो तो उसे बनाने वाला नर उसे अधूरा ही छोड़कर नया घोंसला बनाने में जुट जाता है।

**सारंग बटेर** - यह चिड़िया अपने देश में गुलु या गुन्ड्रा नामों से भी जानी जाती है। इसकी पीठ भूरे मटमैले रंग की और पेट हल्के भूरे रंग का होता है। चोंच के नीचे से छाती तक के हिस्से में काले चित्ते या धारियाँ होती हैं। मादा गुलु नर से आकार में बड़ी भी होती है और ज़्यादा रंगीन भी। उसके गले और छाती के बीच का हिस्सा पूरा काला होता है। गुलु की खास पहचान होती है उसकी नीली-सलेटी-सी चोंच और टाँगें। गुलु भारत में घने जंगलों और रेगिस्तानों को छोड़कर हर जगह, घनी झाड़ियों या घास के मैदानों में आमतौर पर जोड़ों में दिखाई देते हैं।

मादा गुलु नर को जीतने के लिए कई बार दूसरी मादाओं से लड़ती है। जीत जाने पर वह नगाड़े जैसी आवाज़ निकालकर अपनी जीत और नर के चुनाव की घोषणा करती है। फिर अण्डे देने के बाद उनकी देखभाल का काम मर्द करता है। इनका घोंसला आमतौर पर खेत में या जंगल में ज़मीन पर बना एक गड्ढा ही होता है। इसमें घास की एक परत बिछाई जाती है। यह चारों ओर से घास से घिरे होने के कारण आसानी से दिखाई नहीं देता। इसी में अण्डे रखकर नर गुलु उन्हें सेता है और फिर चूज़े निकलने पर उनकी भी देखभाल करता है।



**गिद्ध, चील व कौए** - ये वे चिड़ियाएँ हैं जिनके घोंसले पेड़ों की ऊँची शाखों पर बने होते हैं। ऊँचे पीपल, नीम, बाँस, महुआ, नीलगिरी आदि पेड़ों पर ज़मीन से कम से कम 10 फीट और कई बार तो 30 से 40 फीट की ऊँचाई पर बने होते हैं इनके घरोंदे। पेड़ नहीं होने पर कई बार पुरानी-खाली गढ़ी, मकानों, किलों या पहाड़ी या टीलों की ऐसी जगहों पर भी ये घोंसला बना लेते हैं जहाँ आसानी से कोई पहुँच न सके।

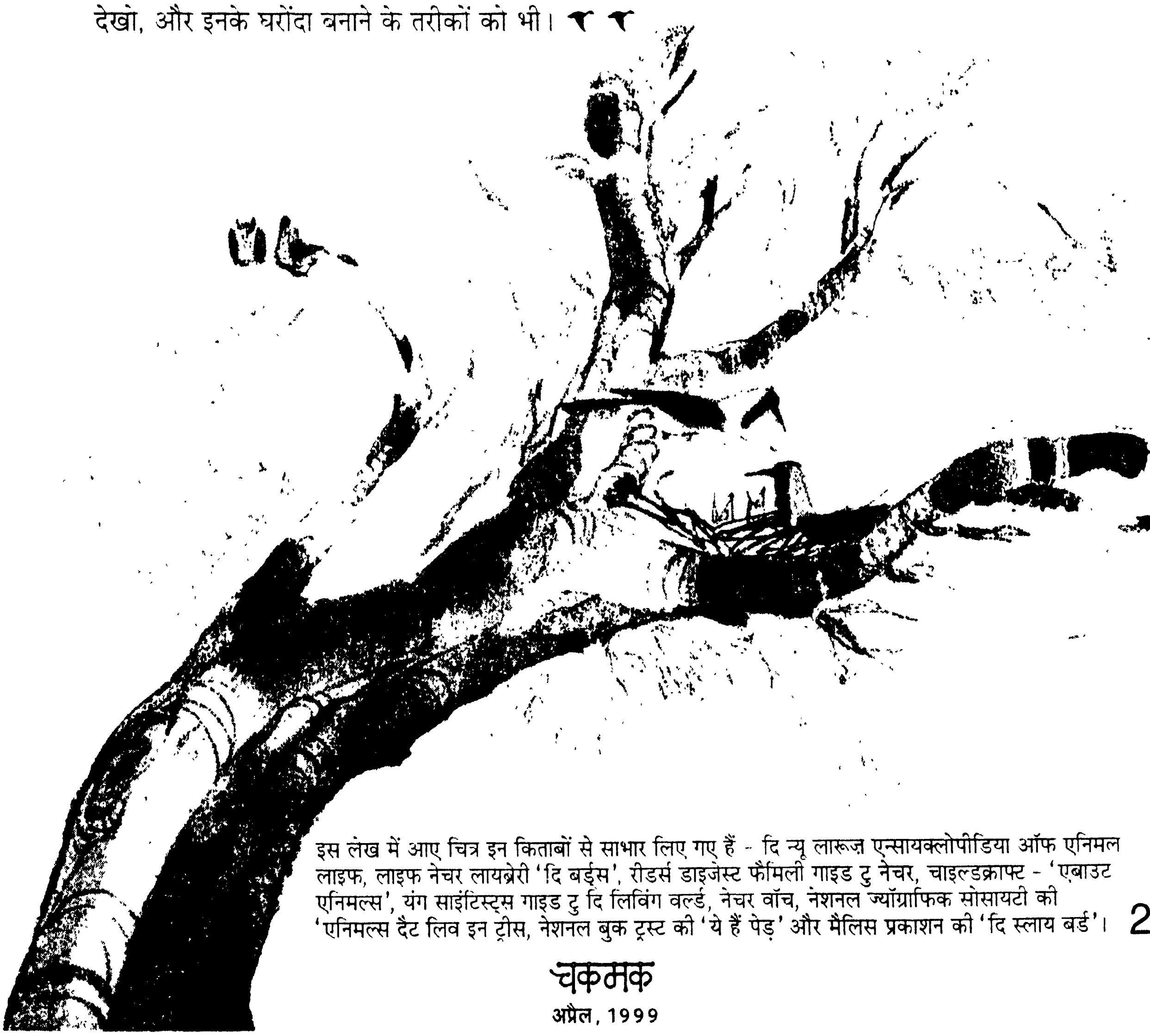
ये घोंसले मोटी-पतली टहनियों से बने होते हैं। बीच के हल्के से गड्ढे में घास-फूस, सन के रेशे, पंख आदि जमा करके उसे नरम-मुलायम बना दिया जाता है। बाहर से देखने पर ये घरोंदे काफी अनगढ़ से दिखाई देते हैं।



**सोन चिरैया** - अंग्रेज़ी में ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड नामक यह चिड़िया पंजाब में तुगदर, मध्य प्रदेश में सोन चिरैया या हुकना तथा हरियाणा व राजस्थान में गौंडावण नाम से जानी जाती है। यह छोटे शुतुरमुर्ग की तरह दिखती है - गाढ़े भूरे रंग की पीठ पर काली धारियाँ, निचला भाग सफेद रंग का, निचली छाती पर चौड़ी काली या स्लेटी पट्टी, सिर का ऊपरी हिस्सा काले रंग के बालों के गुच्छे की तरह। यह चिड़िया बहुत अधिक शिकार किए जाने के कारण विलुप्त होने के कगार पर है। इसलिए अब इसका शिकार करना कानूनन जुर्म है।

इस चिड़िया की ख़ासियत यह है कि वह घोंसला ही नहीं बनाती। किसी भी झाड़ी के आधार पर बने गड्ढे में मादा अपने अण्डे दे देती है और उन्हें वहीं रखकर सेती भी है।

तो यह थी कुछ पक्षियों के घरोंदों की झलक। इसके अलावा तुम्हारे इर्द-गिर्द और कई सारे पक्षी रोज़ ही दिखाई देते होंगे - गौरेया, तोते, कबूतर, .... और न जाने क्या-क्या। तो तुम भी इनकी आदतों को गौर से देखो, और इनके घरोंदा बनाने के तरीकों को भी।



इस लेख में आए चित्र इन किताबों से साभार लिए गए हैं - दि न्यू लारूज़ एन्सायक्लोपीडिया ऑफ एनिमल लाइफ, लाइफ नेचर लायब्रेरी 'दि बर्ड्स', रीडर्स डाइजेस्ट फैमिली गाइड टु नेचर, चाइल्डक्राफ्ट - 'एबाउट एनिमल्स', यंग साइंटिस्ट्स गाइड टु दि लिविंग वर्ल्ड, नेचर वॉच, नेशनल ज्यॉग्राफिक सोसायटी की 'एनिमल्स दैट लिव इन ट्रीस, नेशनल बुक ट्रस्ट की 'ये हैं पेड़' और मैलिस प्रकाशन की 'दि स्लाय बर्ड'।

## हमारी आवाज़ – 6



**इस बार हम शासकीय सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के नौवीं के छात्रों से मिले। जब हम स्कूल में पहुँचे तब परीक्षा होने में कुछ दिन बाकी थे। सभी छात्र परीक्षाओं की तैयारी कर रहे थे। हमने तय किया कि परीक्षा के बारे में ही उनसे बात की जाए।**

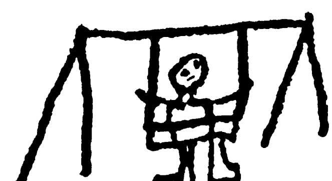
सबसे पहले तो यही बात हुई कि परीक्षाएँ होना चाहिए या नहीं?
सभी एक मत से मानते थे कि परीक्षाएँ होना चाहिए।
क्यों?
फिर हर किसी ने अपने-अपने कारण बताए।



**''परीक्षा तो होना ही चाहिए, सालभर पढ़ते हैं तो उसका रिज़ल्ट मिलता है, अच्छा लगता है।''**
**''टी. वी. तो कभी भी देख सकते हैं, यह समय पढ़ने का है इस समय पढ़ लिया जाए तो जीवन का उद्‌देश्य मिल सकेगा।''**
**''परीक्षा के समय टेंशन रहता है स्वतंत्रतापूर्वक खेल नहीं सकते, सोच नहीं सकते। परीक्षा हो जाती है तो निश्चिंत हो जाते हैं।''**
**''परीक्षा होना अच्छा है क्योंकि सालभर जो कुछ पढ़ा है उसकी जाँच हो जाती है।''**



कमल किशोर मांझी, सातवीं, होशंगाबाद, म. प्र.



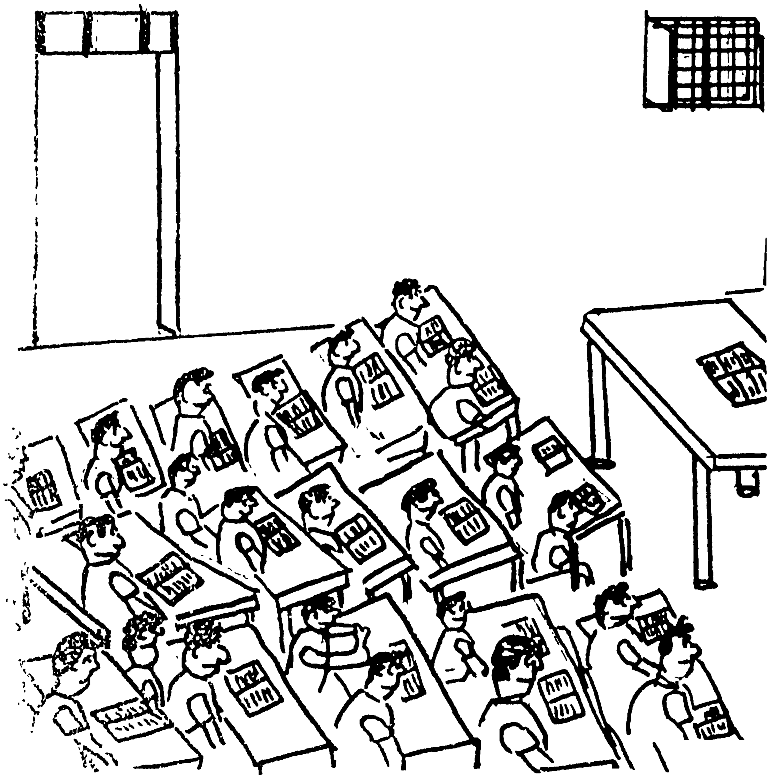
सभी चित्र : पवन कुमार डाबी, सांवेर, इन्दौर, म. प्र.

परीक्षा से पहले लगभग पंद्रह-बीस दिन की छुट्टियाँ होती हैं, परीक्षा की तैयारी के लिए। इसके बारे में इन छात्रों की राय अलग-अलग थी।
**''परीक्षा से पहले कुछ समय छुट्टी होना ठीक रहता है, बीच-बीच में याद करने के लिए।''**
**''परीक्षा के बीच में गेप नहीं होना चाहिए। गेप हो तो ऐसा लगता है आज नहीं कल पढ़ लेंगे।''**

परीक्षा में प्रश्न किस तरह के हों इस पर तो हर कोई अपनी बात कहना चाहता था। किसी को छोटे – एक शब्द या एक दो लाइनों के उत्तर वाले प्रश्न पसंद हैं तो किसी को बड़े-बड़े उत्तरों वाले प्रश्न ठीक लगते हैं।

**''परीक्षा में प्रश्न छोटे होना चाहिए, छोटे प्रश्न जल्दी याद हो जाते हैं।''**

**''छोटे प्रश्न याद रहते हैं। बड़े प्रश्न याद कर भी लो तो उनका थोड़ा हिस्सा ही याद रहता है। बीच के कुछ हिस्से छूट जाते हैं।''**



कुणाल पूरे, बारह वर्ष, इन्दौर, म. प्र.

**''बड़े प्रश्न ज़्यादा नम्बर के होते हैं। एक -दो प्रश्न हल कर दो तो 10- 20 नम्बर मिल जाते हैं। छोटे प्रश्न दस -बीस लिखो तब कहीं 10- 20 नम्बर मिलते हैं। बड़े प्रश्न समझ में आ जाते हैं। छोटे प्रश्न रटना पड़ते हैं।''**

**'' जो लोग रटते हैं उनके साथ ऐसा होता है कि बड़े प्रश्न अच्छे न लगें। बड़े प्रश्नों को रटा न जाए, समझा जाना चाहिए। ''**

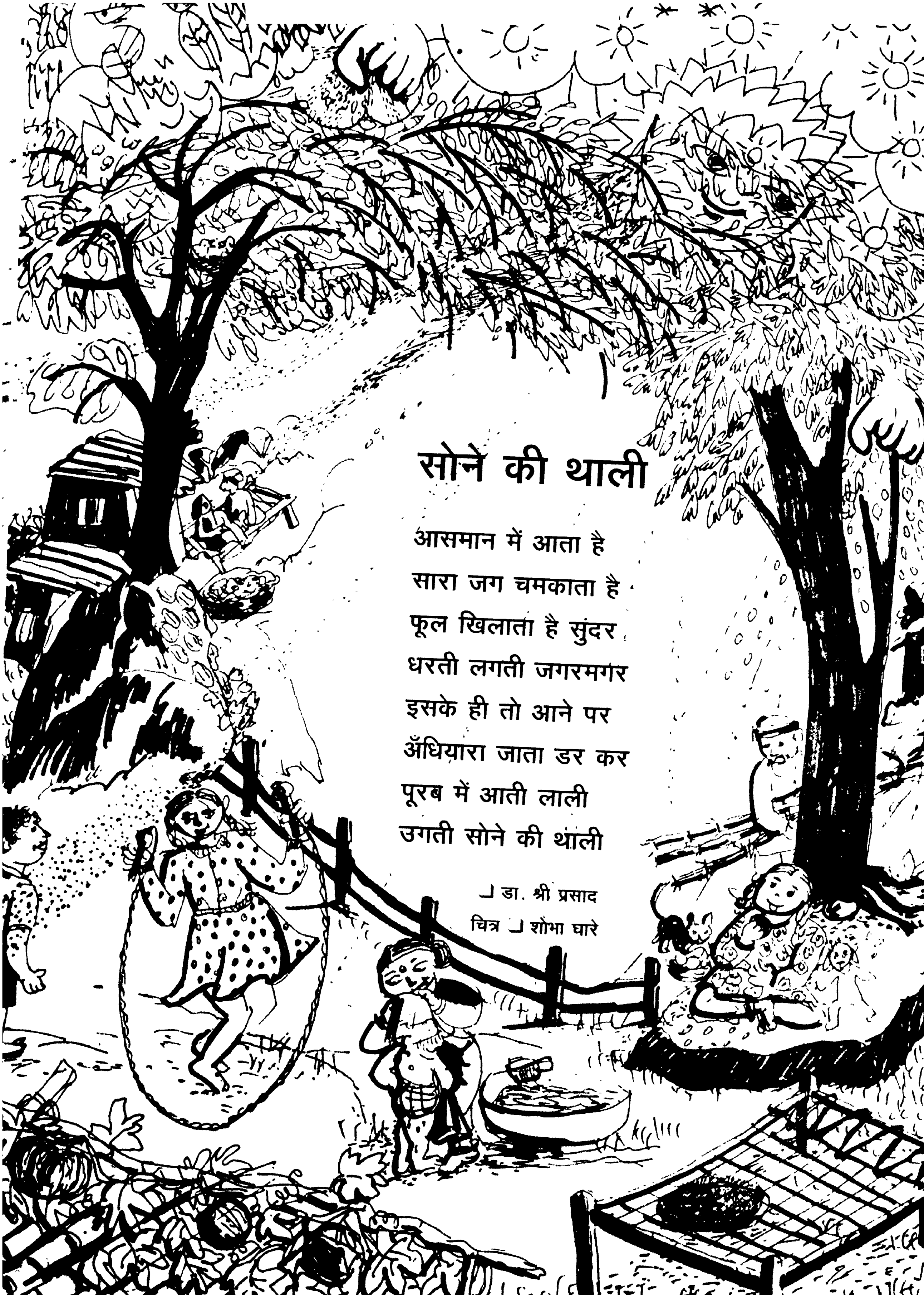
**''समझने की बात सिर्फ साइंस में हो सकती है, गणित में फार्मूला लिखकर समझ सकते हैं पर इतिहास में या बाकी विषयों को कैसे समझेंगे?''**

**''इतिहास में कुछ लोगों को रुचि नहीं होती इसलिए वह उन्हें समझ नहीं आता। फिर याद भी नहीं होता।''**

अब बात रटने या समझने से होती हुई रुचि होने या न होने पर आ गई थी। हम इस के बारे में उन छात्रों से और बात करना चाहते थे पर उनकी छुट्टी का समय हो रहा था। चलते-चलते हमने पूछा कि परीक्षा देने में तो सबको रुचि है न? जवाब मिला **''साल भर मेहनत की है, तो रुचि तो होगी ही।''**



दिनेश गुजरे, संतोष, हरीश पाण्डे, रावेन्द्र पाण्डे, हीरालाल, कमलेश मालवीय, निखिल पाठक, उमेश कुमार पाटिल, अवधेश और कक्षा नौवीं के और भी कई छात्रों ने बातचीत में भाग लिया।



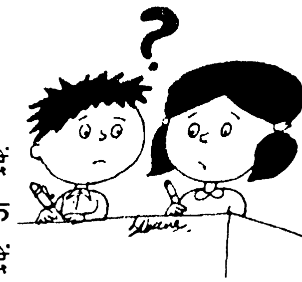
# सोने की थाली

आसमान में आता है
सारा जग चमकाता है
फूल खिलाता है सुंदर
धरती लगती जगरमगर
इसके ही तो आने पर
अँधियारा जाता डर कर
पूरब में आती लाली
उगती सोने की थाली

❏ डा. श्री प्रसाद
चित्र ❏ शोभा घारे

# बड़े गुरुजी

❑ लक्ष्मीनारायण पयोधि



**सितम्बर, 98 से अब तक तुम इस श्रृंखला में कई लोगों के शिक्षकों की यादें पढ़ चुके हो। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे भी अपने शिक्षकों के बारे याद करके कुछ लिखें। इस बार तुम जिनकी यादें पढ़ रहे हो वो बच्चों की एक अन्य पत्रिका समझ झरोखा के सम्पादक हैं।**

**ब**ड़े गुरुजी के बारे में सबसे पहले भैया से ही सुना था। स्कूल से लौटकर वे अक्सर उनके बारे में बताया करते थे। भैया की नज़र में उस वक़्त बड़े गुरुजी दुनिया के सबसे भले और योग्य व्यक्ति थे।

"बड़े गुरुजी बहुत बड़े कलाकार हैं। चाचा नेहरू ने उन्हें माला पहनाई है।" एक दिन गर्व से सीना फुलाकर भैया ने बताया था।

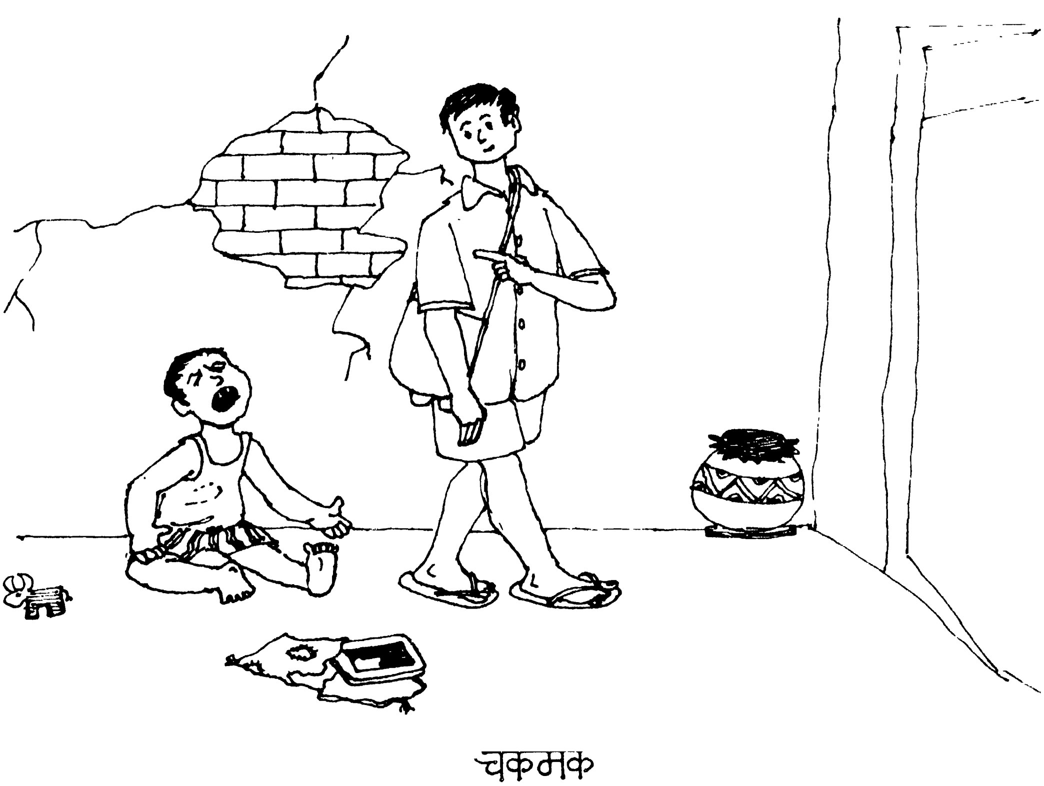
"अच्छाSSS...! क्यों?" अचरज से आँखें फाडकर मैंने पूछा।

"अरे, वो छब्बीस जनवरी पर दिल्ली गए थे न! वहाँ गौर नाच किया था। नाच पहला आया तो चाचा नेहरू ने बड़े गुरुजी को माला पहनाई। मैंने फोटो भी देखा है।"

"चाचा नेहरू ने? क्या वो बड़े गुरुजी के चाचा हैं?" मैंने एक और सवाल दागा।

"नहीं रे! नेहरू चाचा तो सब बच्चों के चाचा हैं। वो बच्चों से बहुत प्यार करते हैं न, इसलिए उन्हें सब लोग चाचा कहते हैं।" भैया ने मेरी नासमझी पर हँसकर बुज़ुर्गों की तरह मुझे समझाया था।

"तो चाचा नेहरू ने क्यों बड़े गुरुजी को माला पहनाई," मेरी भोली जिज्ञासा ने फिर से तर्क किया।





"तू तो पागल है। अरे, तुझे नहीं मालूम कि चाचा नेहरू हमारे देश के प्रधानमंत्री हैं? पुरस्कार तो वही देंगे न?" भैया मेरी मूर्खता पर खीज उठे थे।

"तो ऐसा कहो न! अधूरी बात क्यों बताते हो?" भैया के पागल कहने पर मुझे बुरा लगा था। मैंने गुस्से में मुँह फुला लिया तो भैया मुझे मनाने लगे। हम भाइयों के बीच अक्सर ऐसा झगड़ा चलता ही रहता था।

बात उन दिनों की है, जब भैया को स्कूल जाते देख मैं भी मचल उठता था। रोज़ इस आशा से कि आज़ भैया ज़रूर अपने साथ स्कूल ले जाएँगे, मैं उनके साथ-साथ उठता, नहाता, उनके जैसे कपड़े पहनता और एक बड़े झोले में उनकी पुरानी-टूटी स्लेट रखकर तैयार हो जाता। ... और भैया रोज़ मेरे उत्साह पर पानी फेरते हुए, "तेरा हाथ अभी कान तक नहीं पहुँचता" कहकर अपने साथियों के साथ खिलखिलाते चले जाते थे और ... मेरी मायूसी रोने में तब्दील हो जाया करती थी।

उन दिनों गाँव में किसी बच्चे का स्कूल में नाम लिखने के लिए यही तरीका अपनाया जाता था। गुरुजी बच्चे से कहते, "अपना दायाँ हाथ सिर के पीछे से ले जाकर बायाँ कान पकड़ो!" अगर बच्चे का हाथ कान तक पहुँच जाता तो उसका नाम लिख लिया जाता, अन्यथा, "अभी उम्र नहीं हुई।" कहकर उसे घर भेज दिया जाता। तब जन्म प्रमाण पत्र का इतना चलन नहीं था।

"नारा, तुझे मालूम है, बड़े गुरुजी ने गणेशजी की कितनी सुंदर मूर्ति बनाई है?" भैया ने उत्साह से बताया था।

"सच्ची भैया?"

"हाँ सच्ची में! बहुत सुंदर है। गणेश-उत्सव के लिए बनाई है। कमरे में रखी है। मैंने आज ही देखी।" भैया की आँखों में संतोष की चमक थी।

"मुझे भी दिखाओ न भैया!" मैंने ठुनकते हुए भैया की चिरौरी की।

"नहीं रे! बड़े गुरुजी डाँटेंगे। तेरा नाम स्कूल में नहीं है न, तू नहीं जा सकता।" भैया ने अपनी मज़बूरी बताई।

"तो मेरा नाम स्कूल में क्यों नहीं लिखाते?" मैं रोने लगा था। मुझे उस समय भैया से ईर्ष्या हो गई थी। काश, मैं भी भैया की तरह स्कूल जाता तो बड़े



गुरुजी के सारे काम देखता। उन्हीं के साथ-साथ रहता और सब काम सीखता। तब मुझे भी चाचा नेहरू माला पहनाते।" मेरी कल्पना को पंख लग गए थे।

स्कूल जाने की मेरी चाह जब ज़िद में बदलने लगी तो परेशान माँ ने एक दिन पिताजी से कहा, "इसे स्कूल ले जाकर बड़े गुरुजी से बात क्यों नहीं करते। शायद, वे मान जाएँ!"

"हाँ, लगता है, जाना ही पड़ेगा। बाकी बच्चे तो स्कूल के नाम से ही रोते हैं। पता नहीं इसका मन क्यों इतना ललचाता है!"

जब हम स्कूल पहुँचे तो बड़े गुरुजी आफ़िस में बैठकर दूध - दलिया का हिसाब लिख रहे थे।

"नमस्कारम् गुरुजी!" पिताजी ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

"नमस्कारम् मल्लैया गारू!" बड़े गुरुजी ने अभिवादन का उत्तर देकर तेलगू में पिताजी से कुशल - क्षेम पूछी। उन्होंने सामने रखी कुर्सी की ओर संकेत करके पिताजी से बैठने का आग्रह किया।

तो ये हैं बड़े गुरुजी! दुबला शरीर, साफ़ रंग, ऊँचा माथा और आत्मविश्वास से दिपदिपाती आँखें।

मामूली सफ़ेद धोती और उस पर पूरी बाँहों वाली कमीज़। पीछे दलिया की बोरियाँ और कुछ किताबों के संदूक रखे थे। खेल का सामान, डंबल, लेझिम और न जाने क्या-क्या तो? सारी चीज़ें करीने से सजी हुईं।

एक कोने में बागवानी के औज़ार, ब्लैक बोर्ड, चॉक के डब्बे और डस्टर। मैं एक-एक चीज़ को गौर से देख रहा था। दीवारों पर महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस की तस्वीरों के साथ-साथ सूक्तियाँ भी लिखी हुई थीं। दरवाज़े के ठीक सामने फ्रेम जड़ा वह फोटो भी था, जिसमें गौर (जंगली पशु) के वेश में बडे गुरुजी नर्तक दल के साथ खड़े थे और पंडित नेहरू उन्हें माला पहना रहे थे।

उस दिन बड़े गुरुजी ने पहली बार मेरे सिर पर हाथ फेरा था। उनके उस प्यार भरे स्पर्श को मैं आज तक नहीं भूल सका हूँ। मुझे लगता है कि वह स्पर्श मेरी रगों में जीवन की ऊर्जा बनकर अब तक दौड़ रहा है।

स्कूल के प्रति मेरी लगन और पढ़ने की ललक देखकर बड़े गुरुजी ने 'बिना कान छुवाए' मेरा नाम पहली कक्षा में लिख लिया था। उस दिन उनके मुख से निकला, "खूब पढ़ो, आगे बढ़ो!"

बड़े गुरुजी का नाम तमड़ी चन्द्रैया था, लेकिन उन्हें नाम से कोई नहीं पुकारता था। सब उन्हें बड़े गुरुजी ही कहते थे। चौथी पास थे, परंतु न वे स्वयं कभी देर से स्कूल आते थे, न किसी का देर से आना पसंद करते थे - चाहे वे विद्यार्थी हों अथवा सहयोगी अध्यापक। नियम के पक्के और समय के पाबंद थे बड़े गुरुजी।

सफ़ाई, फुलवारी और बागवानी पर वे बराबर ध्यान देते थे। कक्षाओं और परिसर की सफ़ाई के लिए बच्चों की टोलियाँ बनी हुई थीं, जो अपनी बारी के अनुसार काम करती थीं। यही व्यवस्था फुलवारी और अन्य क्यारियों की देखभाल के लिए थी।

खेल का मैदान व्यवस्थित था। खेल के पीरियड में खेलना सबके लिए अनिवार्य था। पी.टी. और संगीत-व्यायाम (ड्रील) बड़े गुरुजी स्वयं कराते थे। शनिवार की बालसभा की प्रतीक्षा में दिन काटना मेरे लिए तो बहुत कठिन होता था। भाषण और वाद-विवाद में बड़े गुरुजी कभी भी किसी भी छात्र - छात्रा को खड़ा कर देते थे। फिर तो उसे बोलना ही पड़ता था। पहली बार जब डर के मारे मेरे मुँह से शब्द नहीं फूट रहे थे, तब बड़े गुरुजी ने प्यार से समझाया था, "बेटा, जब कभी मंच पर बोलने के लिए खड़े हो जाओ, तब यह भूल जाओ कि तुम्हारे सामने कौन बैठे हैं। यह मानकर कि जितने लोग तुम्हें सुन रहे हैं, सबमें तुम्हीं बुद्धिमान हो, जो मन में आए, बोलते जाओ - पूरे आत्म विश्वास के साथ।"

एक प्रसंग मुझे खूब याद है। गांधी जन्म शताब्दी समारोह चल रहा था। भोपालपटनम् के कृष्णा पामभोई क्लब के मैदान में मुख्य कार्यक्रम था। गाँव के और आस-पास के सारे स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक - शिक्षिकाएँ जुलूसों में आकर वहाँ इकट्ठे हो गए थे। मैदान खचाखच भरा हुआ था। विशाल सभा। मंच पर गणमान्य लोग बैठे थे। बड़े गुरुजी भी। एक-एक कर सभी प्रमुख लोगों ने भाषण दिए। बड़े गुरुजी और कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे तहसीलदार शुक्ला जी में कुछ बातचीत हुई। फिर बड़े गुरुजी खड़े हुए दोनों हाथों को पोंगे की तरह मुँह पर रख कर जोर से पुकार उठे, "अब कक्षा पाँचवीं का छात्र लक्ष्मीनारायण आकर यहाँ गांधीजी के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करेगा।" और बड़े गुरुजी अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

मैं हड़बड़ाया। अब क्या करूँ। गुरुजी के आदेश का उल्लंघन कर नहीं सकता। मंच पर जाना ही पड़ेगा। लेकिन, मैं पाँचवीं का बच्चा! बिना किसी तैयारी के इतने बड़े-बड़े लोगों के बीच इतनी विशाल सभा में क्या बोलूँगा? पर तभी गुरुजी के वे शब्द मेरे कानों में गूँज उठे,"जब भी मंच पर जाओ, अपने को सबसे बुद्धिमान समझकर बोलो!" और मैं मंच पर जाकर खड़ा हो गया। गांधीजी के बारे में थोड़ा-सा बोला। फिर कहा - "मेरे पूर्व विद्वान वक्ताओं ने गांधीजी के बारे में इतनी सारी बातें बताई हैं कि अब अगर मैं कुछ बोलूँगा तो उनकी पुनरावृत्ति ही होगी। आप सबका बहुमूल्य समय मैं नष्ट नहीं करना चाहता, इसलिए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ!" तालियाँ गूँज उठीं। अध्यक्ष महोदय ने मंच पर मुझे रोककर मेरी पीठ ठोकी और बड़े गुरुजी से मेरी ख़ूब तारीफ़ की। बड़े गुरुजी की आँखें खुशी से छलछला उठीं। उन्होंने गर्व से मुझे देखा। वे बोले कुछ नहीं। स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा बस...।

अभिनय की शिक्षा भी मुझे बड़े गुरुजी से ही मिली। निबंध-लेखन की कला भी मैंने बड़े गुरुजी से ही सीखी। वे निबंध नकल करके लिखने के विरोधी थे। आसपास का कोई विषय देते और स्वयं सोचकर अपने शब्दों में निबंध लिखने को कहते। बाद में उसे जाँच कर व्याकरण और वाक्य रचना सम्बंधी बारीकियाँ समझाते। हमें निबंध लिखने में बहुत मज़ा आता था।

गणित बहुत रोचक ढंग से पढ़ाते थे बड़े गुरुजी। वह उनका प्रिय विषय था। इतने व्यावहारिक उदाहरणों से सवालों को हल कराते थे कि वह एक रोचक खेल जैसा लगने लगा था।

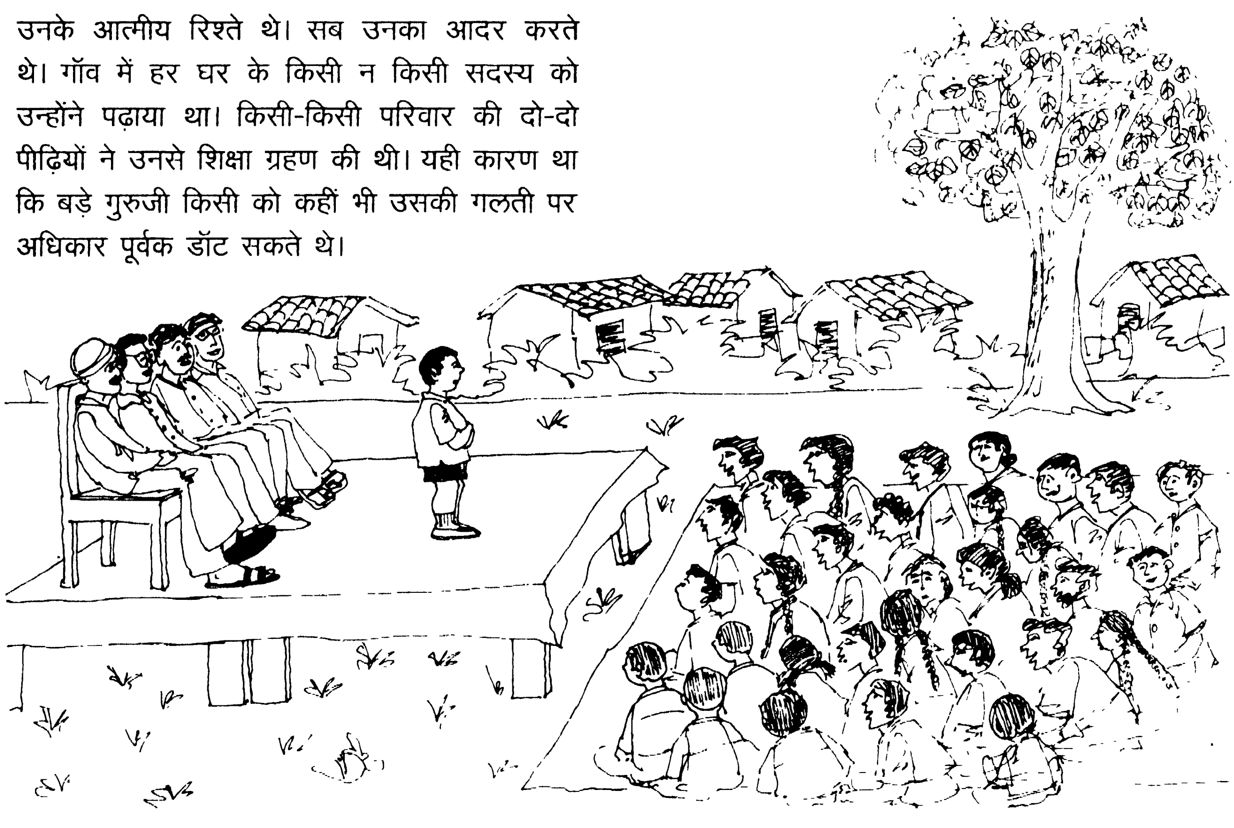
सामाजिक अध्ययन के पाठों को समझाने के लिए हमें गाँव का भ्रमण कराया जाता। यातायात के नियम सड़क पर समझाए जाते। विज्ञान के पाठ समझाने के लिए पास के जंगल ले जाते। तालाब और खेतों पर भी प्रकृति के साथ में चीज़ों को प्रत्यक्ष देखते हुए पढ़ने का आनंद ही अलग था। व्यावहारिक शिक्षा को बड़े गुरुजी बहुत महत्व देते थे। पोस्ट-आफ़िस से सम्बन्धित जानकारी के लिए पोस्ट-आफ़िस के प्रभारी रामचन्द्रय गुरुजी से उन्होंने अतिरिक्त समय देने का आग्रह कर रखा था।

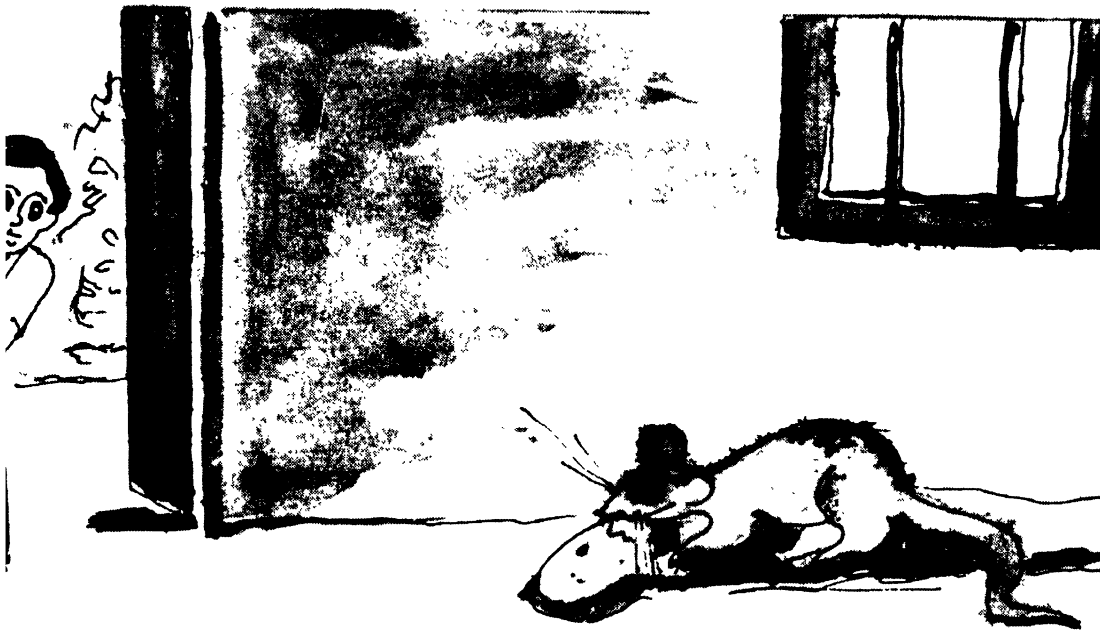
बड़े गुरुजी स्कूल से बाहर कहीं भी मिलते तो पूरी पूछताछ करते। अकारण घूमते हुए पकड़े जाने पर अगले दिन स्कूल में डाँटते और चेतावनी देते। वे बच्चों के घर जाकर माता-पिता को उनकी गतिविधियों की जानकारी देते थे। गाँव में सबसे उनके आत्मीय रिश्ते थे। सब उनका आदर करते थे। गाँव में हर घर के किसी न किसी सदस्य को उन्होंने पढ़ाया था। किसी-किसी परिवार की दो-दो पीढ़ियों ने उनसे शिक्षा ग्रहण की थी। यही कारण था कि बड़े गुरुजी किसी को कहीं भी उसकी गलती पर अधिकार पूर्वक डाँट सकते थे।

बड़े गुरुजी की नौकरी हमारे गाँव की प्राथमिक शाला से ही शुरू हुई थी। वहीं से वे सेवानिवृत्त भी हुए। जब तक वे उस स्कूल में रहे, उसे मंदिर बनाकर रखा। आज बड़े गुरुजी नहीं रहे। स्कूल भी वैसा न रहा।

आज मुझे वह दिन याद आ रहा है, जब मैं पाँचवीं पास करने के बाद टी.सी. लेने पहुँचा था। बड़े गुरुजी मुझे देखते ही व्याकुल हो उठे थे। मैंने चरण स्पर्श कर प्रणाम किया तो वे मुझे छाती से लगाकर रो पड़े, जैसे अपने किसी प्रियजन को विदा कर रहे हों। ❑❑

**सभी चित्र : शिवेन्द्र पांडिया**





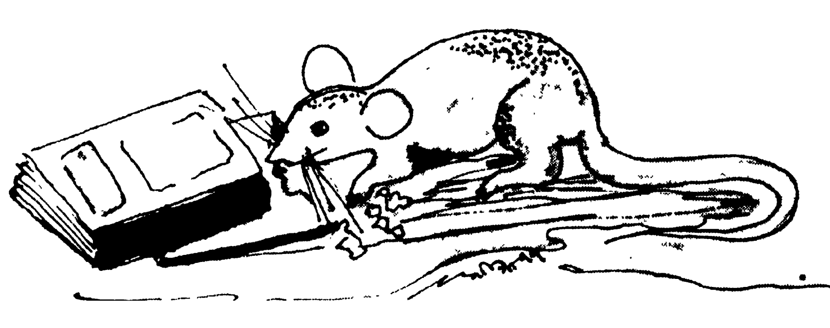
# चूहा

चूहा मेरे घर के अन्दर
कूद लगाता जैसे बन्दर
रोटी खाता बड़े मज़े से
पुस्तक पढ़ता कुतर-कुतरकर

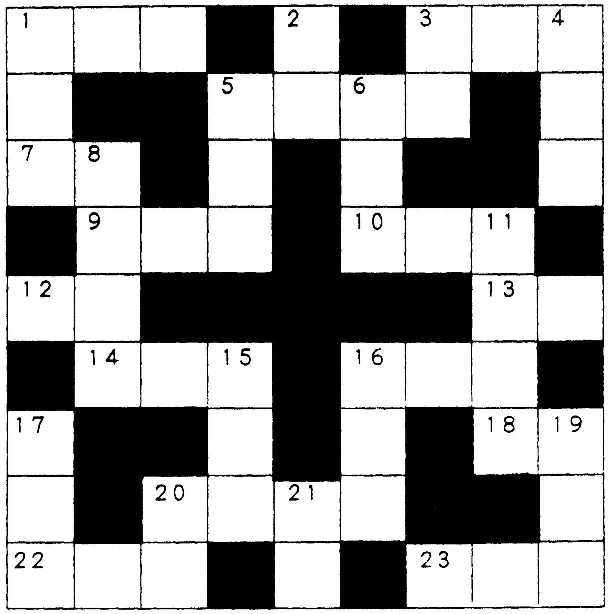


सतीश चन्द्र भगत

चित्र : अर्चना मिश्रा



# वर्ग पहेली - 93




प्रदीप शर्मा, नेतनगर, रायगढ़, म. प्र. द्वारा भेजी पहेली पर आधारित।

## संकेत : बाएँ से दाएँ

1. जिसे जीता न जा सके (3)
3. अनुस्वार के साथ लिखो तो दृश्य या नज़ारा, बगैर अनुस्वार के फूलों का गुच्छा (3)
5. वज़न की देसी इकाइयाँ या वह उक्ति जो पल-पल में बदलने के लिए दी जाती है (2, 2)
7. इससे मस न होने का मुहावरा है (2)
9. पूँछ कटे बसकर में सीख है (3)
10. लाल कली में से छाँटो देशी जूते की ऊपर वाली नोक पर लगने वाला हरा चमड़ा (3)
12. माँ (2)
13. मेघ से सम्बंधित एक नक्षत्र (2)
14. अजब कान में है परदा (3)
16. आरी, छैनी, हथौड़ा जैसे उपकरण (3)
18. गर्मियों में इसके टट्टे भिगोकर लटकाए जाते हैं और इसका सर्बत भी पिया जाता है (2)
20. रबि के फना में है रूठ जाना (4)
22. आजकल मात में सदाबहार पेड़ (3)
23. दम घुटने की अवस्था (3)

## संकेत : ऊपर से नीचे

1. जो स्थाई हो, ख़त्म न होता हो (3)
2. तेज़ ठण्ड में गिरने वाली बारिश या किसी अनचाही चीज़ या व्यक्ति का साथ (2)
3. इरादा या उद्देश्य (2)
4. हास्य रस की काट-छाँट में राज़ (3)
5. शक तो नहीं, पर गद्दा है (3)
6. असम का वह गाँव जो सालभर चारों ओर से ब्रह्मपुत्र नदी से घिरा रहता है (3)
8. आदर सहित (4)
11. समुद्र के किनारे वाली जगहों पर पाया जाने वाला एक रसीला फल जो कच्चे में खूब खट्टा और पकने पर खूब मीठा होता है (4)
15. पानी का जमा हुआ रूप (3)
16. दूध को उबालकर गाढ़ा करना (3)
17. इरादा या इच्छा (4)
19. घर या मकान है मसनद में (3)
20. चूहे, साँप आदि का घर (2)
21. हिन्दुस्तानी फ़िल्मों के जाने-माने पार्श्व गायक (2)

---

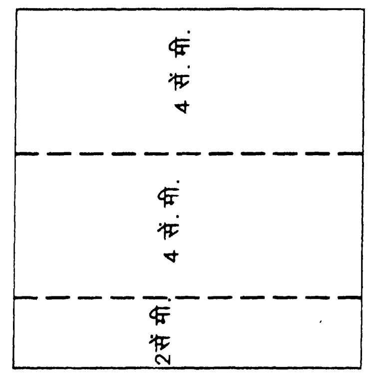
**वर्ग पहेली 93का हल** चकमक के जून माह में बताएँगे। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का जून, 1999 अंक उपहार में भेजा जाएगा।

## *तुम भी बनाओ*

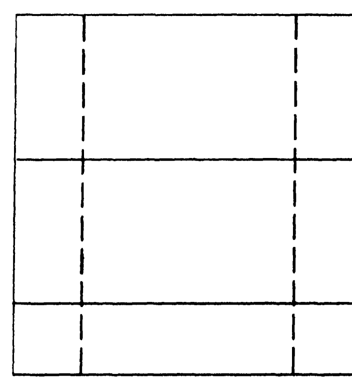
# पेंसिल-ट्रे

यह पेंसिल या पेन रखने की ट्रे तुम बहुत आसानी से बना सकते हो। इसके लिए थोड़ा मोटा काग़ज़ लेना होगा। पुराने ग्रीटिंग कार्ड से भी इसे बना सकते हो। इसके लिए कार्ड को वर्गाकार कर लो। और हाँ बड़े ग्रीटिंग कार्ड से बड़ा और छोटे ग्रीटिंग कार्ड से छोटा वर्ग निकलेगा। इसलिए हम यहाँ नाप नहीं लिखेंगे।

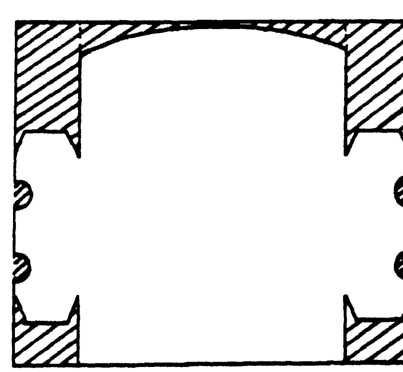
वर्गाकार काग़ज़ को तीन हिस्सों में मोड़ना है। बस इतना समझ लो कि वर्गाकार काग़ज़ 10 x 10 सेंटीमीटर का है तो पहला और दूसरा हिस्सा 4 - 4 सेंटीमीटर का होगा। और, तीसरा हिस्सा 2 सेंटीमीटर का होना चाहिए। अब तुम अपने वर्ग को इसी अनुपात में तीन हिस्सों में बाँट लो।



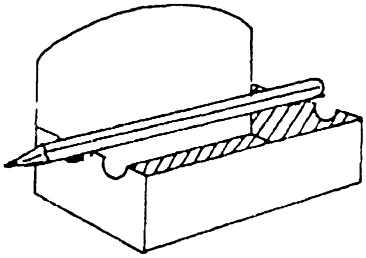

यह तो हुए वर्ग के किसी एक तरफ के मोड़, इसे हम आड़े मोड़ कहेंगे। अब खड़े मोड़ बनाने हैं। वर्गाकार काग़ज़ को खड़े में दोनों ओर 2–2 सेंटीमीटर मोड़ लो। इन सब मोड़ों को अच्छे से निशान बनाकर खोल लो।

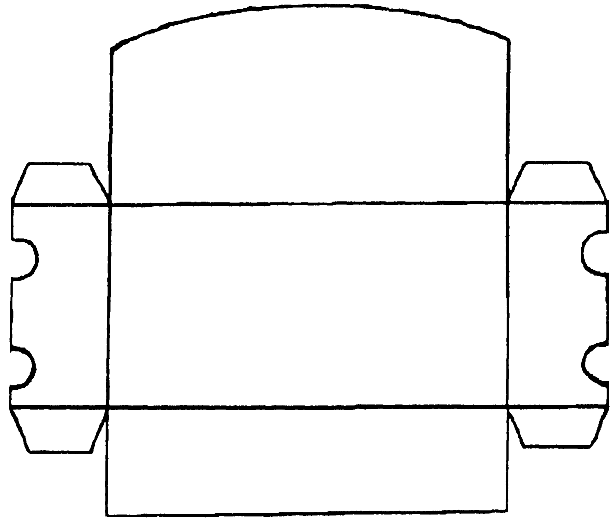


चित्र में दिखाए अनुसार डिज़ाइन को मोड़ वाली लकीरों की मदद से अपने वर्ग पर उतार लो। अब जो हिस्सा तिरछी लाइनों से भरा है उसे काटकर अलग कर दो।



कटे हुए चारों कोनों को चिपका लो। बस तैयार हो गई, पेन-पेंसिल रखने की ट्रे।





## माथापच्ची : हल मार्च, 99 अंक के

1) गुड्डन ने दो मग्गे पानी लाकर बिल में डाल दिया। गेंद प्लास्टिक की थी इसलिए तैरकर ऊपर आ गई।

2) गुटके की पहली स्थिति में ऊपरी सतह पर सफेद वृत होगा, दूसरे में काला वृत, तीसरे में सफेद वृत, चौथे में सफेद त्रिभुज और पाँचवे में काला त्रिभुज होगा।

3) रज़िया के घर 6 बकरियाँ और 12 मुर्गियाँ हैं।

4) आवाज़ सुनने वाले आदमी को कुल्हाड़ी के हर वार की आवाज़ सुनाई पड़ने के बीच भी एक सेकण्ड का ही अन्तर होगा।

5) साँप के मुँह की जगह कुत्ते का मुँह बन गया है।

6) दोनों चित्रों में ये छह अन्तर हैं –

1. भोंपू बजा रहे लड़के की पैंट काली हो गई है।
2. दूसरे चित्र में बाँसुरी है, पहले में नहीं।
3. दूसरे चित्र में उस्ताद जी का कुर्ता कढ़ा हुआ है।
4. हारमोनियम के छेदों की संख्या अलग-अलग है।
5. दूसरे चित्र में बेला बजाने की डण्डी गायब है।
6. दूसरे चित्र में तानपूरे पर पत्ते बने हैं।

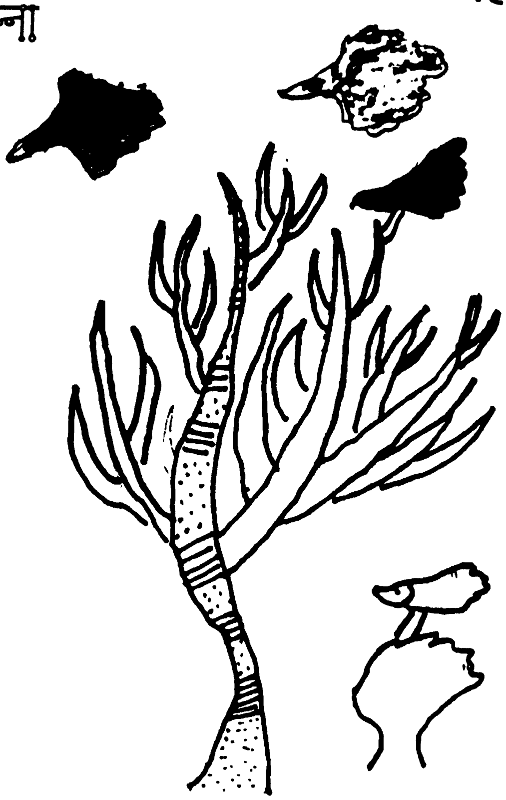
7) हो सकता है लालू के पास एक रुपए का एक सिक्का, 50 पैसे के 6 सिक्के, और पच्चीस पैसे के 5 सिक्के हों। वैसे इस सवाल के और कई हल सम्भव हैं।

## वर्ग पहेली - 91 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | सी | ना | ■ | श | ■ | च | प | ल |
| तं | ■ | च | क | म | क | ■ | र | ■ |
| ग | ला | ■ | ■ | ■ | स | र | दा | र |
| ■ | ल | ख | न | ऊ | ■ | स्म | ■ | ब |
| स | च | ■ | शा | ■ | सा | ■ | प | र |
| रो | ■ | दा | ■ | प | स | र | ना | ■ |
| द | र | वा | जा | ■ | ■ | ■ | मा | न |
| ■ | ब | ■ | मा | ल | दा | र | ■ | ज़ा |
| उ | ड़ी | सा | ■ | ब | ■ | स | वे | रा |

वर्ग पहेली - 91 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं - रीता के सोनारे, भैंसदेही, बैतूल; अजय कुमार मान व कृष्णा गंगराडे, शकरगाँव, खरगोन; शाहिद कुरैशी, आकांक्षा क्षत्री, पेण्ड्रा रोड, बिलासपुर; ओमेश्वर बिरसा, बालाघाट; नीलेष कुमार जैन, हरदा; लुकेश कुमार वर्मा, टोर, रायपुर; शोभनाथ सिंह सिदार, देवगढ़; थवीर कुमार नायक, केशरचुवां; तीनों रायगढ़; टीकम सिंह पोर्ते, गजमा, जशपुर व सीमा तिवारी, हरदीबाज़ार, कोरबा; गौरव, शामगढ़, मन्दसौर। **सभी म. प्र.**। सोनाली जैन, कठूमर, अलवर; निरंजन गोपलान, हिंगोनिया, प्रकाशचन्द्र पारीक, सान्दोलियां, वर्तिका शर्मा, पूनम शर्मा, अजमेर, **राजस्थान**। मालविका पुराणिक, जामनगर, **गुजरात**। इन्हें चकमक का अप्रैल 1999 का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

# पहेलियाँ



● मानसिंग, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

हज़ार पैर, एक बदन
हज़ार हाथ और हज़ार जीभ
सब मिलकर बना एक जीव
वह कौन सा जीव।

वह कौन-सी चीज़ है,
जो एकता में तो काला दिखता है,
पर जुदाई में नीला।

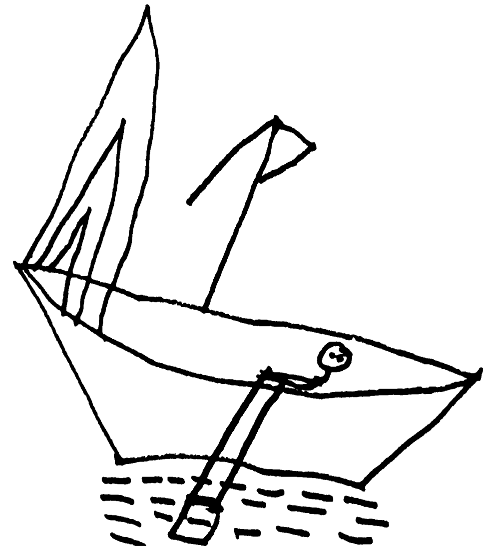
वह कौन-सी चीज़ है
जिसके सामने सूर्य
माँ जैसा है और हवा दुश्मन
जब हवा उसे एक साथ मिलाता है
वह रोने लगता है।

● गोजुम सीकोम और नुकार हाजी,
अपर सुवानसिरी, अरुणाचल प्रदेश

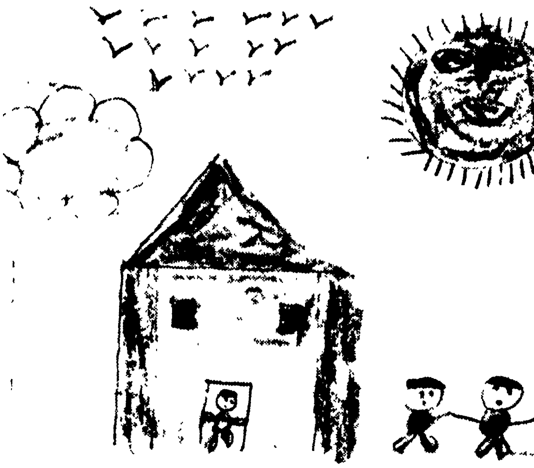
## जहाज

**लौट आया वह जहाज**
**जिसने मुझे**
**सलाम किया था**
**उसी जहाज को**
**मैंने कहा कि जल्दी चलो**
**परंतु**
**न जाने कहाँ खो गया वह जहाज**
**जिसने मुझे सलाम किया था**

● पंखुरी शर्मा, तीसरी, अहमदाबाद, गुजरात

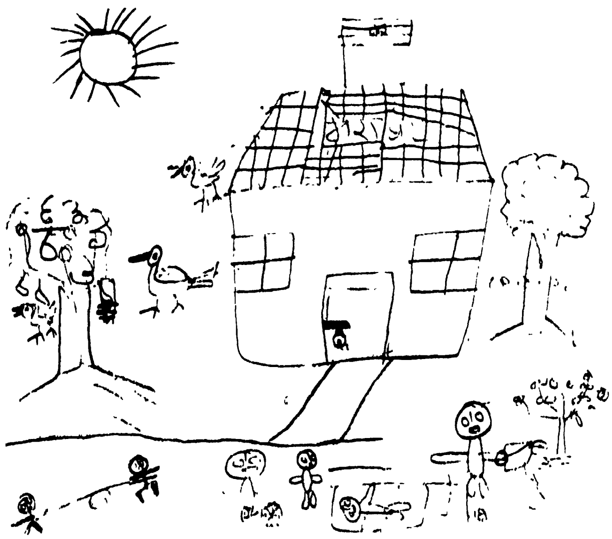


● संदीप हालदार, पाँच वर्ष, भोपाल, म. प्र.

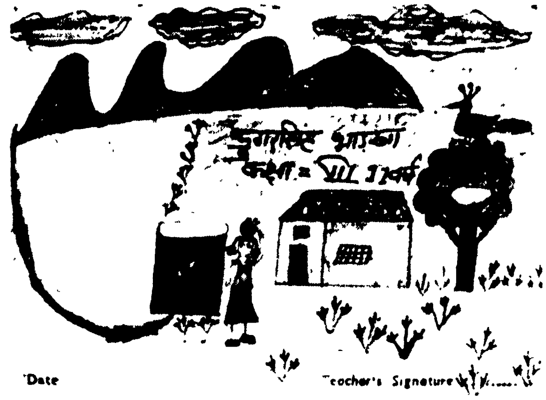




● शुभम काशिव ,पाँचवीं, सांवेर, इन्दौर, म. प्र.



● विजेन्द्र सैनी, छठवीं, झुंझुनु, राजस्थान





● डुंगर सिंग, सातवीं, भाड़खा, बाड़मेर, राजस्थान



● जीवन शर्मा, धार, म. प्र.

## चिड़िया

एक चिड़िया थी। उसका सिर्फ एक ही बेटा था। बेटा बोला चीं चीं। माँ आई पीं पीं। माँ ने अपने बेटे के मुँह में दिए दो दाने। बेटा बोला माँ मुझे आज खिला दो ना। माँ बोली नहीं बेटा तुम अभी आम नहीं खा सकते।

**चित्र एवं कहानी : गौतम उपाध्याय, पाँचवीं, तलवाड़ा बुजुर्ग**



नदियाँ



# माथापच्ची

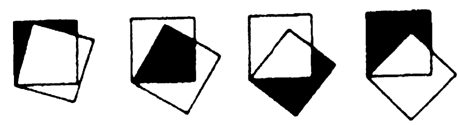
(1)

**रमिया** काकी की तीन बेटियाँ हैं। और उन तीनों की भी तीन-तीन बेटियाँ हैं। अगर हर माँ और उसकी एक बेटी को हम माँ-बेटी की जोड़ी मानें तो इस परिवार में ऐसी कितनी जोड़ियाँ होंगी?

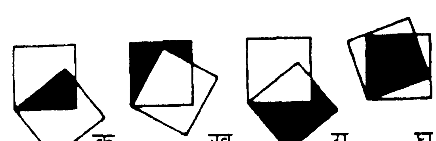
(3)

**तुमने** उस जादुई मुर्गी के बारे में सुना है जो एक अण्डा देती है और अण्डों की संख्या हर मिनट में दुगुनी हो जाती है? ख़ैर, यह मत समझ बैठना कि यह कोई सच्ची बात है। यह तो बस एक ख़्याली सवाल है। तो इसी मुर्गी का एक अण्डा एक टोकरी में रखा था। बात लगभग आधे घण्टे पहले की थी। और अभी पाँच मिनट पहले टोकरी पूरी भर गई। अब तुम ही बताओ टोकरी आधी भरी हुई कब रही होगी? यानी कितने मिनट पहले?

(2)



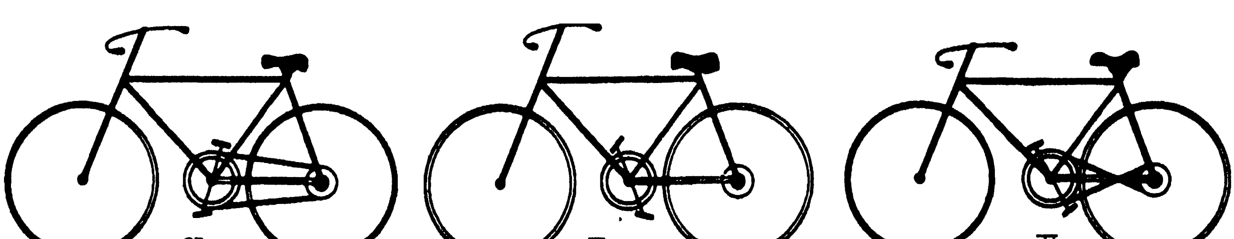
**इन** चित्रों में दो चौकोरों की आपस में बदलती हुई स्थिति दिखाई गई है। क्या ऊपर की लाइन वाले चित्रों को देखकर तुम बता सकते हो कि अगली स्थिति क्या होगी? अगली स्थिति नीचे की लाइन में है।



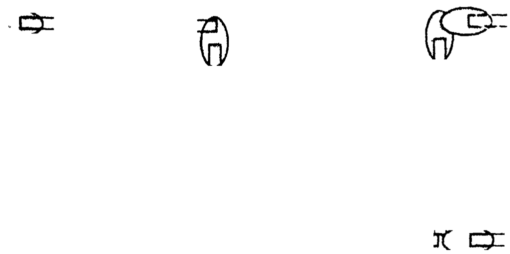
क ख ग घ

(4)

***यहाँ** तीन सायकिलों के चित्र दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से देखकर बताओ कि अगर तुम इनमें से किसी पर सवार होकर पैडल मारो तो वह चल पड़ेगी कि नहीं? और अगर चल पड़ी तो किस दिशा में चलेगी?*



अ ब स



(5)

**इस चित्र में 12 माचिस की तीलियों से तीन वर्ग बने हैं। क्या तुम इनमें से सिर्फ तीन तीलियों की जगह बदलकर उन्हें ऐसी जगह लगा सकते हो कि कुल वर्गों की संख्या 5 हो जाए?**

(6)

''**वैसे** तो यह सवाल भाषा से सम्बंधित है पर इसका रिश्ता कैलेण्डर से भी है,'' सवालीराम चाचा हम लोगों से सवाल पूछ रहे थे।

''यह तो तुम जानते ही हो कि दिसम्बर का महीना साल का आख़िरी महीना होता है। यानी बारहवाँ महीना। लेकिन क्या तुम जानते हो कि दिसम्बर शब्द का असली मतलब क्या है? यह शब्द यूनानी भाषा के 'डेका' शब्द से बना है। डेका यानी दस। इसीलिए अंग्रेज़ी में दस साल के अन्तराल या दशाब्दी को 'डिकेड' कहते हैं। और दिसम्बर हमारे हिन्दी के दस से भी मिलता जुलता है। तो फिर दिसम्बर साल के दसवें महीने का नाम क्यों नहीं?''

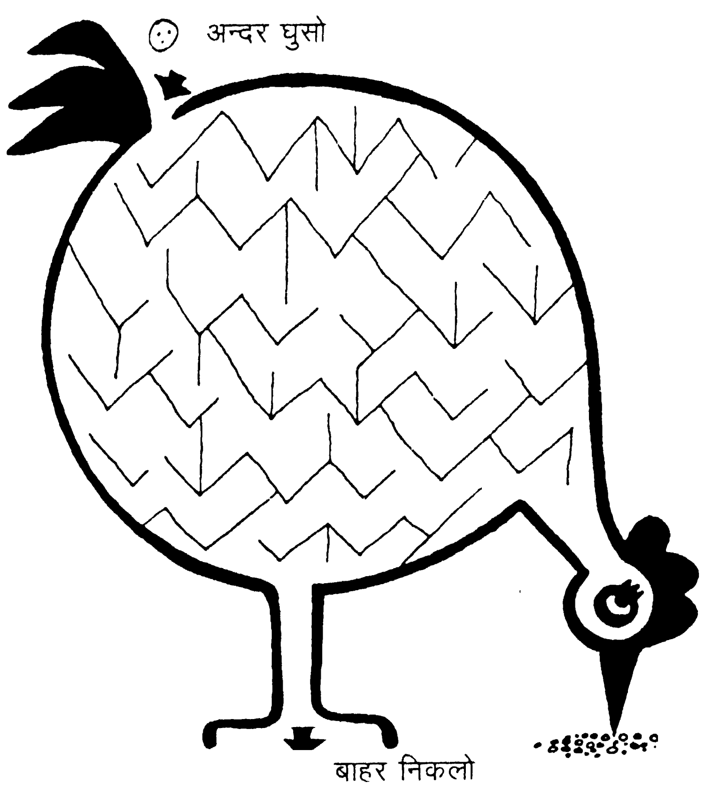
सवालीराम चाचा ने हमारे हैरान-से चेहरों को देखकर यह नसीहत भी दे दी कि ''पता न हो तो पूछकर पता करो।'' सो वही बात हम तुमसे कह रहे हैं।

(7)

**मुझे** एक बड़ा-सा आलू उबालने में15 मिनट लग गए। अगर उसकी जगह 4 आलू होते तो उन्हें उबलने में कितनी देर लगती?

(8)

**क्या तुम इस नन्हे-मुन्ने चूज़े के परों में से अपना रास्ता ढूँढकर बाहर निकल सकते हो?**



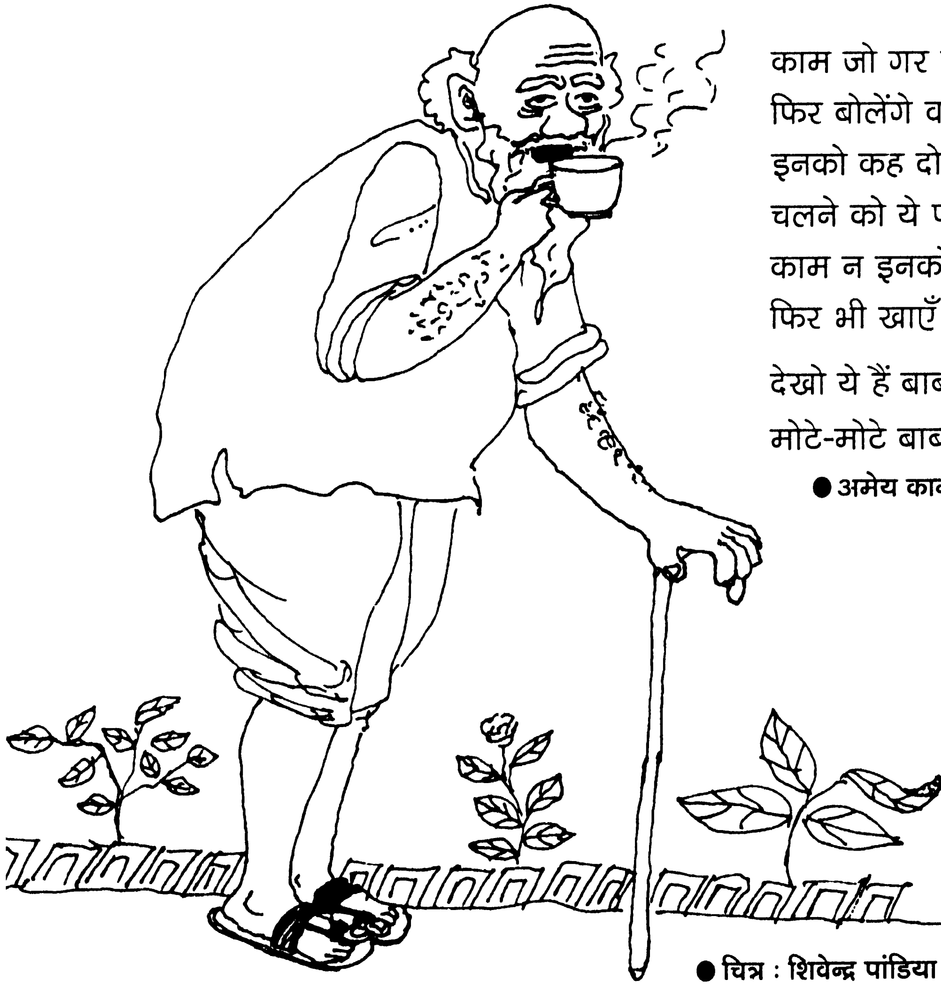
# देखो ये हैं बाबाजी

देखो ये हैं बाबाजी,
बूढ़े-बूढ़े बाबाजी।

कुर्ता ये पहने रहते हैं,
सूट कभी पहनें ना जी।
दूध ये पीते नहीं हैं भैया
चाय का कह दो; झट, ''हाँ जी''
छड़ी अगर इनकी ले लोगे,
डाँट के बोलें, ''हट पाजी''॥

देखो ये हैं बाबाजी,
दाढ़ी वाले बाबाजी।



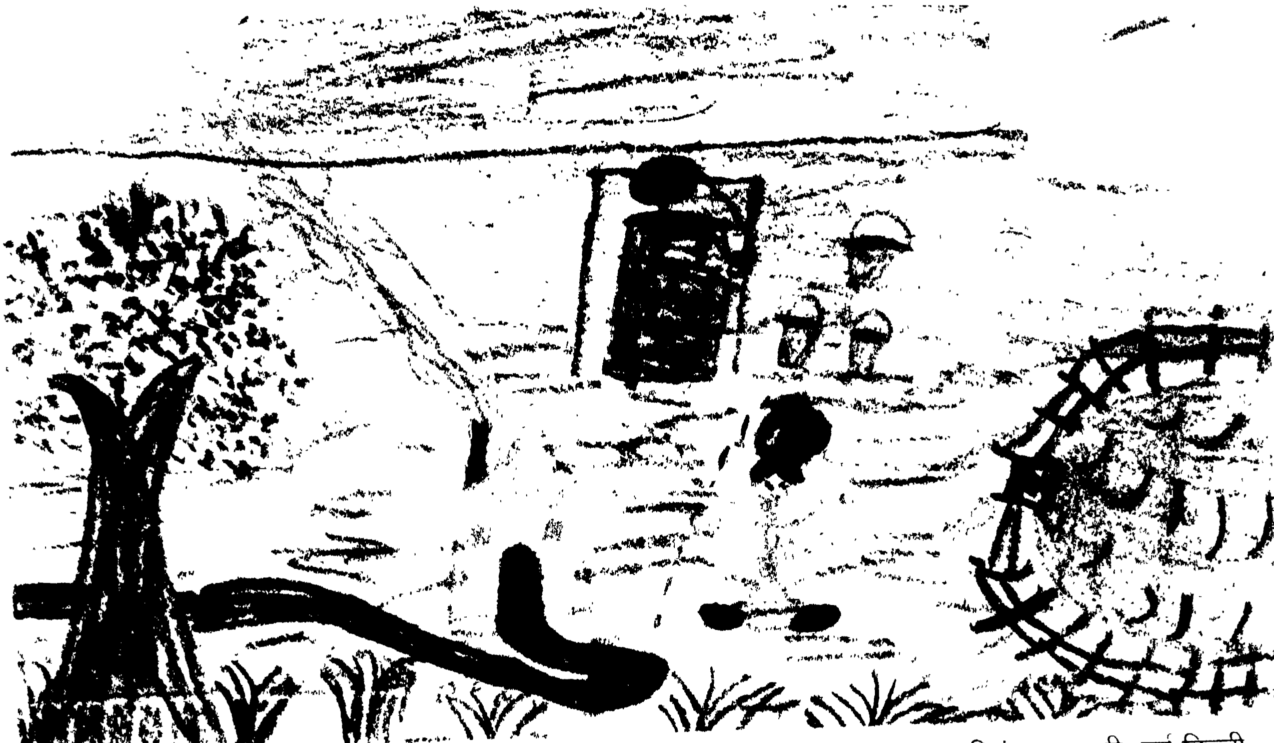


काम जो गर तुम इनका कर दो,
फिर बोलेंगे वाह-वाह जी।
इनको कह दो फ़िल्म लगी है,
चलने को ये फट राज़ी॥
काम न इनको रत्ती भर भी,
फिर भी खाएँ मावाजी॥

देखो ये हैं बाबाजी,
मोटे-मोटे बाबाजी।

**● अमेय कान्त, देवास, म. प्र.**

**● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया**



● प्रियंवदा, पहली, नई दिल्ली



• स्वाति माथुर, दूसरी (पता नही लिखा)

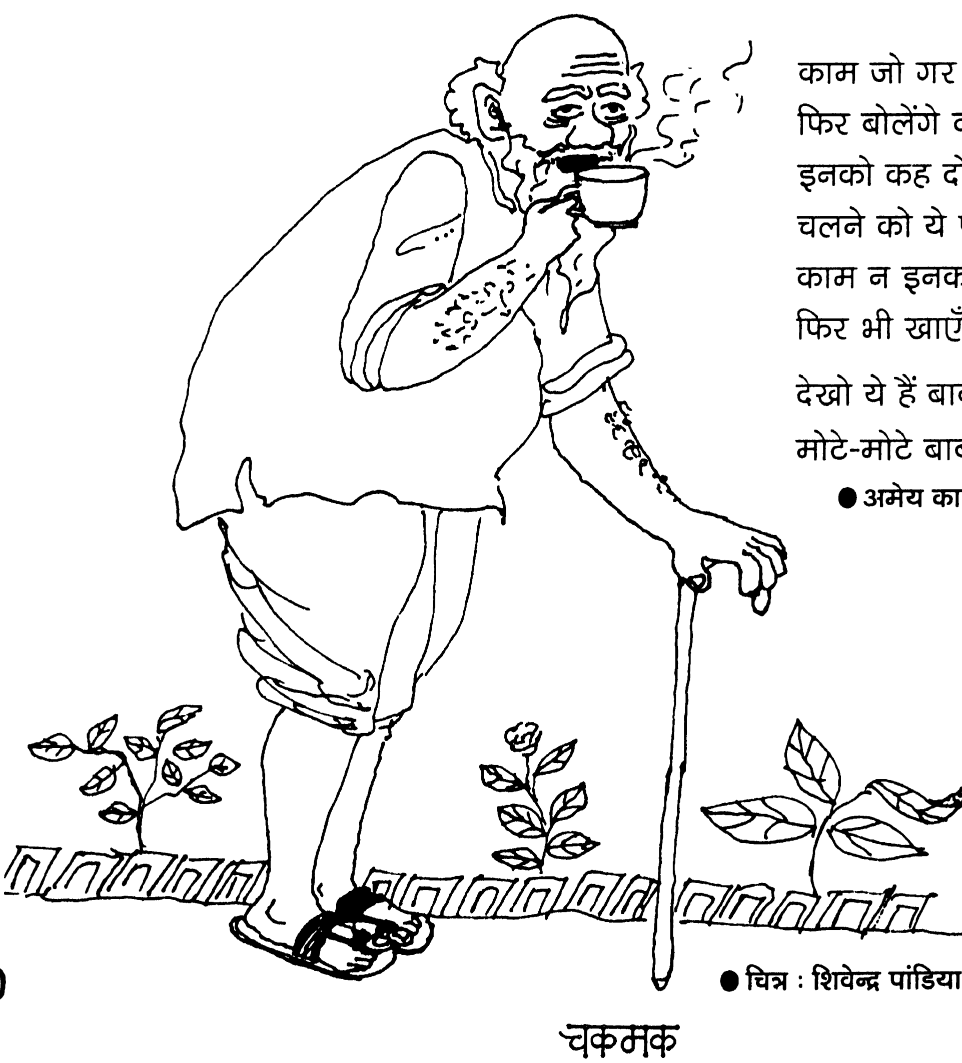
# देखो ये हैं बाबाजी



देखो ये हैं बाबाजी,
बूढ़े-बूढ़े बाबाजी।

कुर्ता ये पहने रहते हैं,
सूट कभी पहनें ना जी।
दूध ये पीते नहीं हैं भैया
चाय का कह दो; झट, ''हाँ जी'
छड़ी अगर इनकी ले लोगे,
डाँट के बोलें, ''हट पाजी''॥

देखो ये हैं बाबाजी,
दाढ़ी वाले बाबाजी।

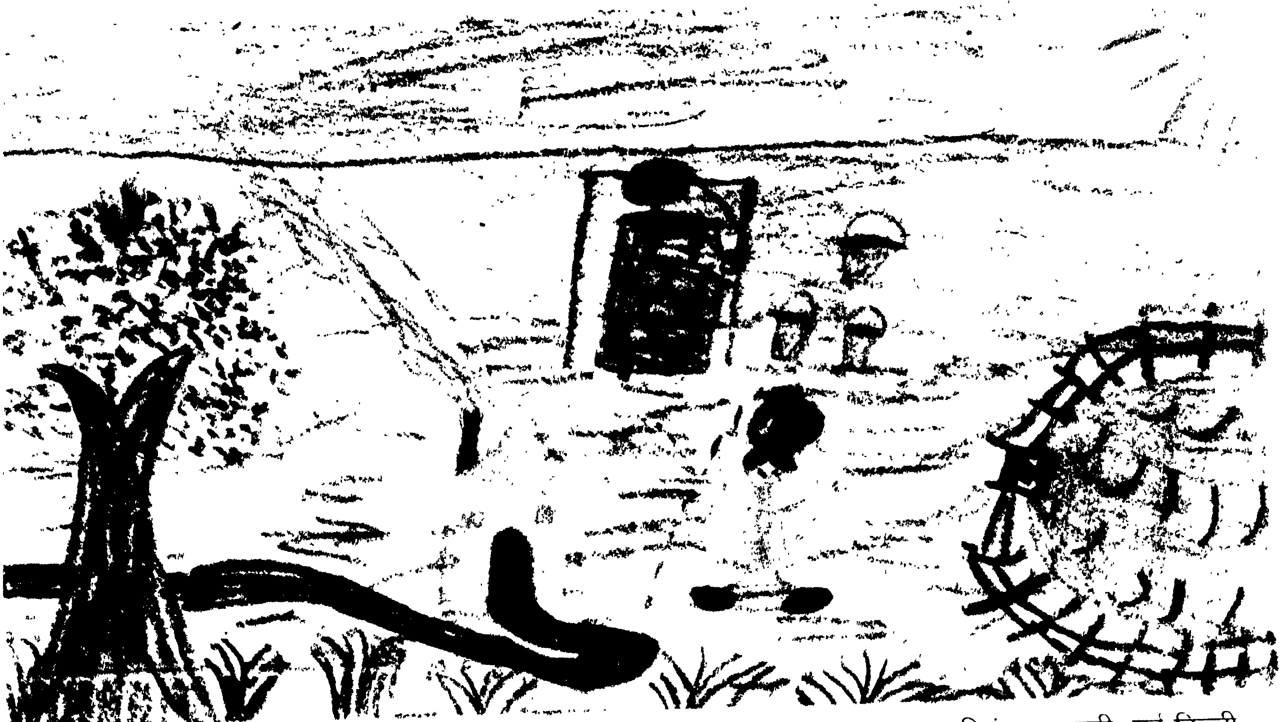


काम जो गर तुम इनका कर दो,
फिर बोलेंगे वाह-वाह जी।
इनको कह दो फ़िल्म लगी है,
चलने को ये फट राज़ी॥
काम न इनको रत्ती भर भी,
फिर भी खाएँ मावाजी॥

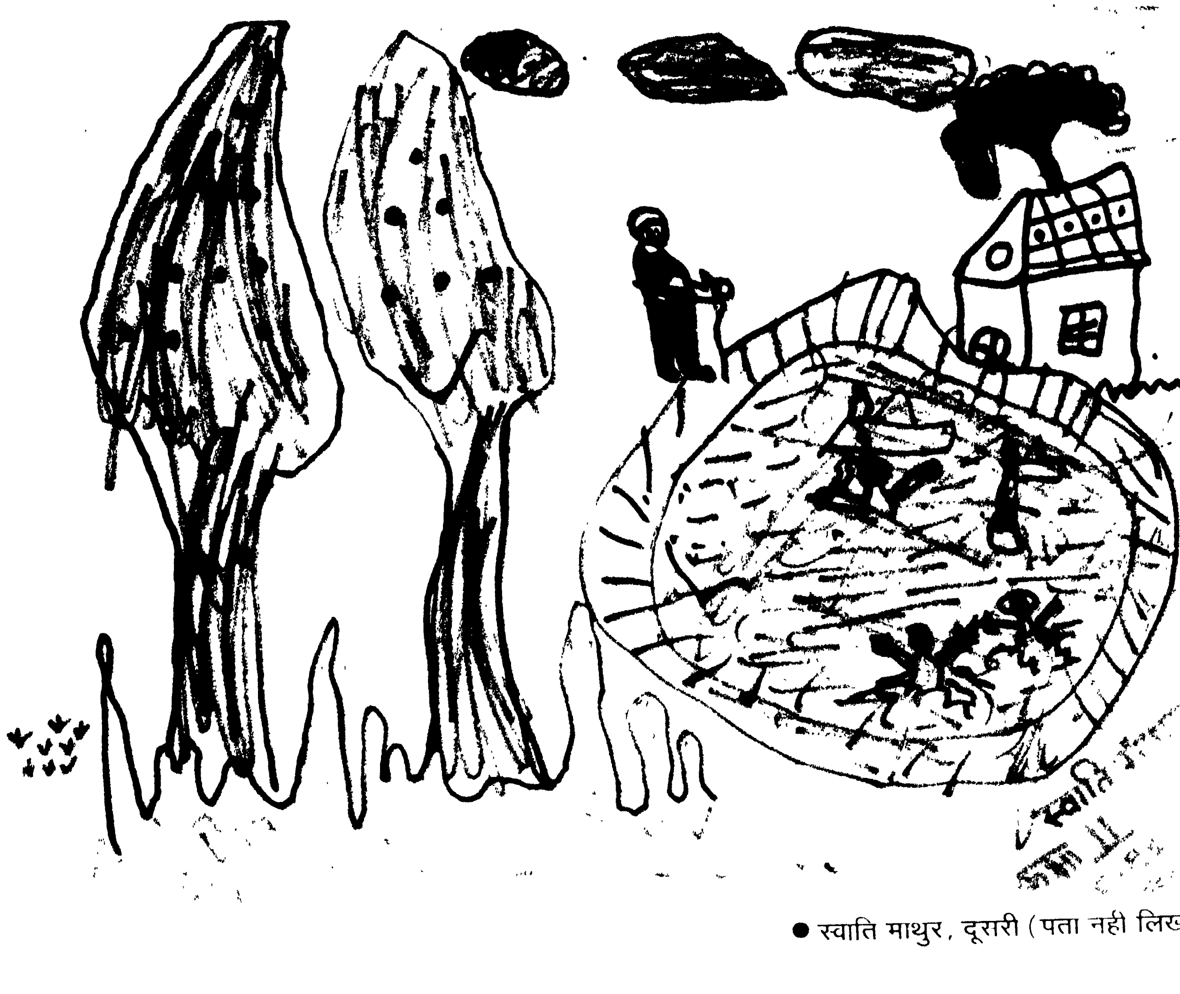
देखो ये हैं बाबाजी,
मोटे-मोटे बाबाजी।

● **अमेय कान्त, देवास, म. प्र.**

● **चित्र : शिवेन्द्र पांडिया**



● प्रियंवदा, पहली, नई दिल्ली




● स्वाति माथुर, दूसरी (पता नहीं लिखा)